नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा
नवम्बर, 2018

वर्ष - 17

अंक-18
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रतियां – 1500

प्रकाशक
उत्तराखण्ड महिला परिषद्
द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि
पर्यावरण शिक्षा संस्थान,
अल्मोड़ा– 263601

प्रकाशन सहयोग
राजेश्वर सुशीला दयाल
चैरीटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली

सभी फोटो : अनुराधा पाण्डे
मुखपृष्ठ : गोमुख में गंगा
अंतिम आवरण : पाटा गांव में जल संवर्धन

परिकल्पना एवं सम्पादन
अनुराधा पाण्डे

विशेष आभार
पद्मश्री डा0 ललित पांडे,
उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े
सभी महिला संगठन एवं संस्थाएं

सहयोग
डी. एस. लटवाल, सुरेश बिष्ट
रमा जोशी, कमल जोशी,
कैलाश पपनै, जीवन चन्द्र जोशी

टंकण
डी0 एस0 लटवाल

मुद्रक– सत्य शान्ति प्रेस, अल्मोड़ा

उत्तराखंड महिला परिषद् सहयोगी संस्था

जनपद	संस्थाऐं
अल्मोड़ा	– सीड, सुनाड़ी – पर्यावरण चेतना मंच, मैचून – राइज, सेराघाट – उत्तराखण्ड शिवा शक्ति समिति, दन्या
बागेश्वर	– पर्यावरण एवं शिक्षा समिति, शामा – ग्रामीण उत्थान समिति, कपकोट
चमोली	– शेप बध्राणी, कर्णप्रयाग – जनदेश, सलना – नवज्योति महिला कल्याण संस्थान
गोपेश्वर	– लोक जागृति विकास संस्था, कर्णप्रयाग – लोक कल्याण विकास समिति, सगर
चम्पावत	– पर्यावरण संरक्षण समिति, पाटी
नैनीताल	– जनमैत्री, गल्ला, नथुवाखान
पौड़ी गढ़वाल	– नयारघाटी ग्राम स्वराज्य समिति, बाडियूं – नीलकंठ सेवा संस्थान, मलेलगांव
पिथौरागढ़	– शैक्षणिक ग्रामोन्नति समिति, गणाई–गंगोली – मानव विकास समिति, पछाधार – उत्तरापथ सेवा संस्था, मुवानी
रूद्रप्रयाग	– हिमालयन ग्रामीण विकास सस्थान, ऊखीमठ
टिहरी गढ़वाल	– घनश्याम स्मृति शिक्षा एवं कल्याण संस्थान, बडियारगढ़

पत्रिका में दिये गये विचार लेखक/लेखिका के हैं। परिषद् का इससे सहमत होना आवश्यक नही है।

नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा
नवम्बर, 2018

वर्ष - 17

अंक-18
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

इस अंक में

1	**हमारी बातें**	अनुराधा पांडे, अल्मोड़ा	1—4
2	**पहाड़ की महिला की जिंदगी**	प्रीति भट्ट ग्राम सारी, जिला रूद्रप्रयाग	5
3	**जंगल और पानी**	कविता गौड ग्राम सतबुंगा, जिला नैनीताल	6—7
4	**शिक्षा यह भी**	दीपा नयाल ग्राम दुत्कानेधार, जिला नैनीताल	8
5	**सिलाई प्रशिक्षण**	ममता गौड़ ग्राम सतबुंगा, जिला नैनीताल	9
6	**चिंताःचिता से बढ़कर**	केदार सिंह कोरंगा शामा, जिला बागेश्वर	10—11
7	**प्यारी माँ**	चन्दा रौतेला गोगिना धारी, जिला बागेश्वर	12
8	**मेरा कम्प्यूटर**	विनिता गौड़ ग्राम पाटा जिला नैनीताल	12
9	**गढ़वाल में भ्रमण**	कमला नयाल ग्राम सतबुंगा जिला नैनीताल	13—14
10	**किशोरियाँ और कम्प्यूटर**	हरिप्रिया लोधियाल ग्राम दुत्कानेधार जिला नैनीताल	15—16
11	**अनौपचारिक शिक्षा भी जरूरी**	भारती लोधियाल ग्राम दुत्कानेधार, जिला नैनीताल	16

12	**जीवन की राहें**	संजय सिंह मेवाड़ी ग्राम गल्ला, जिला नैनीताल	**17—18**
13	**हिमाचल भ्रमणःकिसान की कलम से**	महेश गलिया ग्राम गल्ला, जिला नैनीताल	**19—21**
14	**महिला मेले की आख्या**	अनिला पंत, पुष्पा पुनेठा ग्राम दन्या, जिला अल्मोड़ा	**22—25**
15	**महिला संगठन पाटा**	राजेश्वरी देवी ग्राम पाटा, जिला नैनीताल	**26—29**
16	**पानीःसमस्या और समाधान**	राजेन्द्र सिंह बिष्ट, गणाई—गंगोली, जिला पिथौरागढ़	**30—32**
17	**गोगिना की बेटी**	पुष्पा रौतेला गोगिना धारी, जिला बागेश्वर	**33**
18	**महिला संगठन गोड़ गाँव**	माया जोशी बिन्ता, जिला अल्मोड़ा	**34**
19	**संगठन दन्या**	अनिला पंत दन्या, जिला अल्मोड़ा	**35—38**
20	**किशोरियों के लिए कम्प्यूटर शिक्षण**	गरिमा नयाल ग्राम सतबुंगा, जिला नैनीताल	**39—40**

हमारी बातें

पिछलें कुछ वर्षों में उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े हुए संगठनों और संस्थाओं के बीच होने वाली आंतरिक बहसों में ''बदलाव'' शब्द ने एक महत्वपूर्ण जगह ले ली है। यूँ तो किसी भी समाज की संस्कृति, परंपराओं, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन की प्रक्रिया सतत रूप से चलती रहती है तथापि उत्तराखण्ड में इस समय हो रहे बदलावों की प्रकृति और गति विचार करने योग्य है। इस बदलाव के दृश्य और अदृश्य परिणाम ग्रामीण महिलाओं के जीवन के साथ–साथ उन सभी गैर–सरकारी संस्थाओं और संगठनों के वर्तमान कार्यों में भी हो रहे हैं जो लंबे समय से क्षेत्र में सक्रिय हैं।

उत्तराखण्ड के ग्रामीण इलाकों में काम करने से बनी समझ से यह भी पता चलता है कि बदलाव की प्रक्रिया को विकास, राजनीति, संस्कृति और सामाजिक समता के विचार, मूल्य, धारणाएं और प्रथाएं मिलकर प्रभावित करते हैं। बदलाव की प्रक्रिया में ये अवधारणाएं एवं मूल्य आपस में जुड़ते हैं तो कहीं–कहीं टकराव की स्थिति भी बनाते हैं।

उत्तराखण्ड के पहाड़ी गाँवों में नारी–विमर्श के संदर्भ में देखें तो पायेंगे कि पिछले दो–तीन दशकों में बदलाव की गति में अभूतपूर्व तेजी आयी है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक मसलों में स्त्रियों की भूमिका बढ़ रही है। पुरानी मान्यताएं बदल रही हैं, रीति–रिवाजों में निरंतर दखल जारी है। इस का एक महत्वपूर्ण आयाम ''पहाड़ी संस्कृति'' में बदलाव आना है। उदाहरण के लिए विवाहिता स्त्रियों द्वारा पति के मंगल और दीर्घायु हेतु किये जाने वाले व्रतों को ही लें। पहाड़ी क्षेत्र में वट–सावित्री का व्रत प्रचलित रहा। आज के दौर में करवा–चौथ के व्रत की धूमधाम हो गयी है। स्त्रियाँ ठीक उसी प्रकार के वस्त्राभूषण धारण कर रही हैं, चाहती हैं, जैसा टेलीविजन और सोशल मीडिया में दिखाया जा रहा है। इसी प्रकार मुम्बई के भव्य पंडालों में होने वाली पूजा–अर्चना को फिल्मों और टेलीविजन में दिखाया जाता है। गणेश–चतुर्थी का वैसा ही आयोजन पहाड़ी इलाकों में भी धूमधाम से होने लगा है।

दिलचस्पी की बात यह है कि पहाड़ी ग्रामीण महिलाओं की ''पहचान'' बदल रही है। नंदा के पिछले अंक में इस मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की गयी है। ज्यों–ज्यों उत्तराखण्ड महिला परिषद् इस विषय में संवाद बढ़ा रही है, यह स्पष्ट होता जा रहा है कि पहाड़ी स्त्रियों के जीवन की सैद्धांतिक सोच और उन के दिनचर्या की वास्तविकताओं एवं अनुभवों के बीच एक भारी फासला पैदा हो गया है।

इस विषमता का सबसे ज्वलंत उदाहरण मिलता है, ग्रामीण स्त्रियों के प्राकृतिक संसाधनों के साथ विशिष्ट लगाव के सिद्धांतों (जो चिपको आंदोलन और उसके बाद लोकप्रिय हुए) और युवा स्त्रियों की आशा–आकांक्षाओं से उपजी उन धारणाओं के बीच, जहाँ वे जल–जंगल–जमीन पर आधारित जीवन–चर्या से अलग कुछ अन्य काम करने के उपाय खोज रही हैं। आज ग्रामीण युवा–स्त्रियाँ और किशोरियाँ शिक्षित हैं। वे शिक्षा को एक ऐसे औजार के रूप में देख रही हैं जो उन्हें पारंपरिक कार्यों से मुक्ति दिला सकेगा। साथ ही, युवाओं और किशोरियों में उन कारकों के बारे में अत्यंत जागरूकता दिखाई देती है जो उनके आगे बढ़ने के मार्ग में रूकावटें डालते हैं।

इन कारकों में पितृसत्ता एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में उभरती है। पितृसत्ता को सामाजिक ढ़ाँचे के गठजोड़ों और आपसी व्यवहार की व्यवस्थाओं के रूप में देखने–समझने से मालुम होता है कि यह एक जाल की तरह है। यह कोई व्यक्तिगत गुण नहीं, एक व्यवस्था है। प्रायः लोग सत्ता को एक दमनकारी व्यवस्था या शोषक के रूप में देखते हैं। वस्तुतः ''सत्ता'' शब्द का इस्तेमाल इस सोच से आगे बढ़कर किया जाना जरूरी है। सत्ता कहीं भी हो सकती है, हर जगह हो सकती है। यह सिर्फ राजनीति में नहीं होती बल्कि परिवार, गाँव, धर्म, राज्य, राष्ट्रों के आपसी संबंधों, मनुष्य से मनुष्य के बीच आचार–व्यवहार के गुणों और संबंधों, हर जगह फैली हुई है।

पितृसत्ता को समझने के लिए भी शारीरिक गुणों की भिन्नता से आगे बढ़कर सामाजिक ढ़ाँचे और लोगों के आपसी व्यवहार की प्रथाओं और संबंधित परिणामों पर ध्यान दिया जाना जरूरी है। यह समझना भी जरूरी है कि इस व्यवस्था में ऐसी अनेक विचारधाराएं हैं जो पुरूषों को स्त्रियों से श्रेष्ठ ठहराती हैं। उन संस्थागत व्यवहारों का निर्माण और संचालन करती हैं, जिन में स्त्रियाँ उस तरह की प्रभावशाली हैसियत में नहीं रह पाती जो पुरूष सहज ही पा लेते हैं।

दैनिक जीवन में चलने वाली बोल–चाल में भी पितृसत्ता का प्रभाव रहता है। नागरिकों की सोच, आपसी विमर्श के दायरे, गतिविधियाँ, दैनिक जिम्मेदारियाँ और उनका निर्वहन सभी कुछ सत्ता के संबंधो से संचालित होता है। चूँकि किसी भी समाज में लोग सामाजिक ढ़ाँचे और उसकी व्यवस्थाओं के अनुरूप चलने का प्रयास करते हैं, आपसी व्यवहार के साथ–साथ रिश्ते और उनके दायरे भी पितृसत्ता के अनुसार तय होते चलते हैं।

पितृसत्ता के पारंपरिक स्वरूप और संभावनाओं पर भी बदलाव का असर हो रहा है। उदाहरण के लिए इस दौर में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो गया है कि पढ़ी–लिखी युवतियाँ और

किशोरियाँ गैर–कृषि क्षेत्रों में कैसे रोजगार पायें? इस से पहले की पीढ़ी में अधिकतम महिलाएं खेती का काम कर रही थीं। पारिवारिक जमीन के साथ–साथ महिलाओं ने गाँव से पलायन किये हुए अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों द्वारा छोड़ दिये गये खेत भी उपजाऊ किये थे। वे न सिर्फ उस छोड़ी गयी जमीन में फसलें बोती रहीं बल्कि घास–काँटे साफ करके खेतों का स्वरूप भी बनाये रखा। फलस्वरूप गाँवों में खेती बची रही। गाँव की छवि बची रही। खेत बंजर होने से बच गये।

आज स्थिति बदल गई है। परिवार–दर–परिवार पलायन हो रहा है। खेती बंजर हो रही है। जंगलों से व्यवहार और रिश्ता टूट रहा है। साथ ही, परिवार के भीतर सदस्यों के बीच बातचीत का तरीका, आपसी व्यवहार भी बदल रहे हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े हुए कुछ ऐसे गाँव हैं जहाँ बीस–पच्चीस साल पहले महिला संगठनों ने जल–जंगल–जमीन के संरक्षण के लिए अथक प्रयास किये। संजायती भूमि में बाँज, अयांर, उतीस आदि पेड़ लगाये। चाल–खाव खोदे ताकि पानी बचे और बढ़े। इन सभी गतिविधियों के पीछे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन का भाव रहा। यह भी सोच रही कि चौड़ी पत्ती वाले पेड़ लगाने से भविष्य में जमीन और जल तो बचेगा ही, जानवर भी पलते रहेंगे। हालांकि पिछले बीस–पच्चीस साल पहले से ही घर–गाँव में रखे जाने वाले जानवरों की संख्या कम होने लगी थी लेकिन यह अंदेशा न था कि अनेकानेक परिवार कोई भी जानवर रखना नहीं चाहेंगे। आज ऐसे अनेक परिवार हैं जो समाज के दबाव के कारण अथवा आर्थिक सुरक्षा के लिये एक गाय या भैंस पालते हैं, इस के अलावा कोई भी जानवर घर में नहीं रखना चाहते।

जल–जंगल–जमीन के साथ महिलाओं के विशिष्ट रिश्ते की सैद्धांतिक समझ और व्यवहारिक समझ के अंतर का संबंध पलायन से भी है। बीस–तीस साल पहले महिला संगठनों ने पेड़ लगाये जो अब वयस्क हो गये हैं। परंतु नई पीढ़ी के युवा गाँवों से बाहर रह रहे हैं। बूढ़ी दादी–ताईजी गाँव में रहती हैं। उन्होंने पेड़ लगाये, संरक्षण भी किया लेकिन वृद्धावस्था के कारण जंगल का काम नहीं कर पाती। वे कैसे जंगल से घास–लकड़ियाँ लायें, गाय–भैंस, बकरी पालें। ''भविष्य में बच्चों के काम आयेंगे,'' इस सोच से पेड़–जंगल बचाये–बनाये गये लेकिन युवा तो खेतों–जंगलों से दूर जा रहे हैं। साथ ही, शहर में रह रहे बेटे–बेटियाँ, नाती–पोते घर में रह रही माँ–दादी से कहते हैं कि वे जंगल न जायें। कमाऊ बच्चों ने गाँव में ही गैस के चूल्हे की व्यवस्था करके मातृ–पितृ ऋण की पूर्ती कर ली है। वे यह भी सलाह देते हैं कि माँ–दादी पास की किसी दुकान से दूध का पैकेट खरीद लें। दूध

के पाउडर का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। वैसे भी गाँव में रह रहे गिने–चुने वृद्धों का दैनिक खर्च कम ही होता है। इस सब बदलाव का सीधा असर यह हुआ कि गाँवों में वृद्ध–प्रौढ़ स्त्रियाँ अब कहने लगी हैं, ''हमारे खेतों से कोई घास काट कर ले जाता तो थोड़ी साफ–सफाई हो जाती।''

जल–जंगल–जमीन और जानवरों का मुद्दा अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाने वाले समाज में आ रहे इस बदलाव का असर व्यापक है। न सिर्फ स्त्रियों की प्राथमिकताएं बदल रही हैं बल्कि पर्यावरण संरक्षण–संवर्धन की गतिविधियाँ भी चुनौतियों से दो–चार हो रही हैं। ज्यों–ज्यों जंगलों से मिलने वाली वस्तुओं के वैकल्पिक साधन उपलब्ध हो रहे हैं, ग्रामीण जीवन में परिवर्तन आ रहा है। खाना बनाने के लिए गैस का प्रयोग, पालतू जानवरों की संख्या में कमी होना, तराई–भाबर से पहुँच रहे भूसे का चारे के लिए उपयोग, घर की फसलों के अतिरिक्त राशन की दुकानों पर बढ़ती हुई निर्भरता, ऐसे परिवर्तन हर जगह दिखाई दे रहे हैं।

नंदा के इस अंक में अनेक किशोरियों ने कम्प्यूटर पर काम सीखने से जुड़े हुए अनुभव साझा किये हैं। अनेकानेक किशोरियाँ कई मील पैदल चल कर सुबह–सुबह कम्प्यूटर शिक्षण केन्द्रों में पहुँच रही हैं। अध्ययन कर रही हैं। यह कार्य उनकी प्राथमिकताओं में है। जबकि उन की माँ–दादी ने इस उम्र में जंगल–खेती का काम संभाल लिया था। यह उदाहरण भी स्त्री–जीवन में बदलाव की एक बानगी है।

इस के साथ ही, पेयजल की बढ़ती दिक्कतें पहाड़वासियों को भूलने नहीं देंगी कि जल–जंगल–जमीन का संरक्षण, संवर्धन जीवन के मूल में है। पानी के बिना जीवन संभव नहीं। इस अंक में पाटा गाँव के निवासियों द्वारा जल–संरक्षण के लिए उठाये गये कदम पर विस्तृत चर्चा प्रकाशित की गई है। साथ ही, ''पानीःसमस्या और समाधान'' आलेख में पेय–जल की उपलब्धि के साथ–साथ उस की गुणवत्ता को बनाये रखने पर विशेष बल दिया गया है।

इस अंक में इतना ही।

शुभेच्छू,

अनुराधा पांडे

पहाड़ की महिला की जिंदगी

प्रीति भट्ट

पहाड़ में महिलाओं की जिंदगी बहुत कठिन है। खासकर, गामीण महिलाओं के साथ कहीं ना कहीं कठोर सामाजिक बंधन और मान्यताएं जुड़ी हैं। एक महिला की कब सुबह होती है और कब रात, उसे पता तक नहीं चल पाता। परिवार में सुबह सबसे पहले उठती है और रात में सारा काम पूरा करके सोती है। बच्चों, बूढ़ों और जानवरों की सभी जिम्मेदारियाँ महिलाओं के कंधों पर होती हैं। इतना करने के बाद भी उसके काम का कोई महत्व नहीं होता। किसी मजदूर को भी काम के बदले मजदूरी दी जाती है। महिला तो सिर्फ यही चाहती है कि परिजन उसके काम के महत्व को समझें पर ऐसा बहुत कम होता है।

एक ग्रामीण महिला सुबह चार बजे उठती है, गौशाला जाती है। वहाँ से दूध ले कर आती है और घर में चूल्हा जलाती है। चाय बनाती है। वह परिवार में सभी सदस्यों को बिस्तरों में ही चाय देती है। बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करती है, टिफिन बनाती है। परिवार के लिए नाश्ता बनाती है। जब ये सभी काम पूरे हो जाते हैं तो वह चार–पाँच किलोमीटर दूर घास काटने के लिए जाती है। वहाँ से आने के बाद यदि वह थकी हो या उसकी तबियत खराब हो जाये तो कहा जाता है कि बहाना बना रही है। आखिर पहाड़ की महिलाओं के साथ ऐसा क्यों होता है? ये बात मुझे अन्दर तक कचोटती है।

एक माँ अपने बेटे को काम से लौटने के बाद चाय देती है। जब बहू जंगल से घर आती है तो पानी न भी दे मगर प्यार से बात ही कर ले तो बहू को अच्छा लगेगा। इससे उसके मन में अच्छी भावनाएं जन्म लेंगी। अगर परिजन घर के काम में हाथ न भी बँटाये पर बहू के साथ प्यार से बात कर लें, उसके काम को महत्व दें तो बहू को भी अच्छा लगेगा। वह सभी काम खुशी से कर लेगी। मैं तो यही समझती हूँ कि काम करने से पहले मनोबल बढ़ाना और उत्साह देना अधिक महत्वपूर्ण है। इससे महिलाओं को घर का कार्य बोझ नहीं लगेगा। साथ ही घर के अन्य सभी सदस्यों को भी घर के सभी काम करने चाहिए। घरेलू काम की जिम्मेदारी सिर्फ महिलाओं के कंधों पर क्यों हो? सभी को घर के काम सीखने चाहिए और माँ–बेटी एवं बहू की मदद करनी चाहिए।

जंगल और पानी

कविता गौड

मेरा नाम कविता गौड़ है। मेरी माताजी श्रीमती मुन्नी देवी हैं। पिताजी का नाम श्री महेश सिंह गौड़ है। मेरे गाँव का नाम सतबुंगा और तोक पाटा है। मेरे पिताजी एक किसान हैं। वे जनमैत्री संगठन के माध्यम से सन् 2018 से गाँव का अध्ययन कर रहे हैं। इस अध्ययन के आधार पर जनमैत्री संगठन से हमें पानी के टैंक मिले। टैंकों से किसानों को बहुत फायदा हुआ है। गर्मी के मौसम में हर जगह पानी सूख जाता है। खेतो में फसलें भी सूख जाती हैं। साथ ही इस मौसम में खेतों को सींचने के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है। जब मेरे पिताजी जनमैत्री संगठन से जुड़े तो हमें पानी का टैंक मिला। ग्रामवासियों ने टैंकों में जमा हुए पानी का उपयोग खेतों को सींचने के लिये किया।

साथ ही हमने यह भी समझा है कि जंगल को नष्ट होने से रोकना होगा। अगर हम पेड़ों को काट देंगे तो जंगल का पानी भी नष्ट हो जायेगा। अगर हम जंगलों में ज्यादा से ज्यादा पेड़–पौधों का रोपण करें तो जंगल का पानी बच सकता है। साथ ही जंगलों में रहने वाले जीव–जंतुओं पक्षियों को पानी की आवश्यकता होती है। जंगलों को नष्ट होने से रोकना जरूरी है। गर्मी के मौसम में भी जंगलों में भीषण आग लगने से पेड़–पौधे खत्म हो जाते हैं।

जनमैत्री संगठन ने कृषि एवं बागवानी के महत्व को समझते हुए इस के आधुनिकीकरण एवं उत्पादन में वृद्धि करने के लिए भरसक प्रयास किये हैं। पहाड़ों में अधिकांश कृषक इतने गरीब है कि उनके पास न तो सिंचाई के तरीके बढ़ाने के लिए संसाधन हैं, न ही कृषि को सुधारने के लिए साधन उपलब्ध हैं। अतः कृषक अपनी भूमि से अधिक उत्पादन लेने में असमर्थ रहते हैं। साथ ही अब कृषक अपने खेतों को स्वयं न जोतकर दूसरे किसानों से काम करवाते हैं और स्वयं अन्य कार्यों में लग जाते हैं। स्वयं कृषि करने में उन्हें अधिक लाभ दिखाई नहीं देता।

जनमैत्री संगठन एक ऐसा मंच है जिसमें लोग मिलकर काम करते हैं। इस संगठन के

कार्यों को आगे बढ़ाने में महिलाएं भी सहयोग देती हैं। साथ ही हमें जनमैत्री संगठन से पानी के टैंक बनाने की विधि सिखाई गयी। इस टैंक की लम्बाई–चौड़ाई 10 फिट X 10 फिट और गहराई 4 फिट है। बारिश का पानी टैंक में एकत्र हो जाता है। साथ ही, गाँव के ऊपरी हिस्से में स्थित एक जल स्रोत से पाइप लगा कर सभी ग्रामवासी अपने–अपने टैंक भर लेते हैं। गर्मी और ठंड के मौसम में आवश्यकता के अनुसार इस पानी को पेड़–पौधों, आलू, मटर, गोभी इत्यादि सब्जियों को सींचने के काम में ले लिया जाता है। इससे पाटा में फसलों की पैदावार बहुत अच्छी हुई। किसानों को लाभ हुआ। इस कार्य में महिलाओं ने बहुत योगदान दिया है।

गर्मी के मौसम में पाटा गाँव में आड़ु, खुबानी की फसलें होती हैं। सभी ग्रामवासी मिलजुल कर काम करते हैं। एक दूसरे का साथ देते हैं। इसके बाद सेब, नाशपाती, प्लम के फलों का सीजन आता है। क्षेत्र से फलों को बाहर शहरों में भेजा जाता है। पहाड़ों में किसी भी फसल को बोने से पहले मिट्टी तैयार की जाती है। इसके लिए मिट्टी को पलटना तथा जमीन को नरम रखना जरूरी है। इससे मिट्टी में धँसी हुई जड़ें सरलता से बाहर निकल आती हैं। फसल बोने से पहले खेतों में पानी डाला जाता है। इससे कृषकों को फायदा होता है। जनमैत्री संगठन ने पानी के सुचारू वितरण के लिए उचित कदम उठाए हैं। पाटा गाँव में गर्मियों में पानी की जरूरत बढ़ जाती है। गर्मी के कारण छोटी नदियाँ भी सूख जाती हैं। इसमें जनमैत्री संगठन द्वारा गाँव में सभी को बताया गया कि पानी को बचाना बहुत जरूरी है। पानी की हर एक बूँद अमूल्य है। हम सभी को मिल कर पानी के संवर्धन के लिए प्रयास करने चाहिए।

शिक्षा यह भी

दीपा नयाल

मेरा नाम दीपा नयाल है। मैंने इसी वर्ष बारहवीं कक्षा की परीक्षा पास की है। मैं विकास खंड रामगढ़ में पोस्ट सतबुंगा के दुल्कानेधार गाँव में रहती हूँ। मैंने आज तक कम्प्यूटर का सिर्फ नाम ही सुना था। कम्प्यूटर के बारे में कुछ भी पता नहीं था। जब जनमैत्री संगठन से पता चला कि गाँव में कम्प्यूटर आ रहे हैं तो हमने इस बारे में घर पर चर्चा की। घर वालों ने हमें कम्प्यूटर सीखने के लिए भेजा। हम 01.06.2018 से कम्प्यूटर सीखने गल्ला गाँव में गये। तब और आज में बहुत अलग सा लगता है। अब हमें कम्प्यूटर का बहुत ज्ञान हो गया है। आज तो ऐसा लगता है कि हम कम्प्यूटर की दुनिया में बहुत आगे बढ़ सकते हैं। पहले तो बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद घर में ही थे। कभी सोचा भी नहीं था कि कम्प्यूटर पर काम करना सीखेंगे। गाँवों में कहीं भी कम्प्यूटर नहीं थे। अब हम सुबह सात बजे से दस बजे तक रोज कम्प्यूटर केन्द्र में अभ्यास करने के लिए जाते हैं। केन्द्र में कम्प्यूटर कम और बच्चे अधिक होने के कारण समय ज्यादा नहीं मिल पाता लेकिन जितना भी समय मिलता है उसमें बहुत ध्यान से सीखते हैं। हम बहुत से लोग कम्प्यूटर सीखने साथ–साथ जाते हैं। कम्प्यूटर के प्रति मेरी रूचि बहुत बढ़ गई है। साथ ही जो अतिरिक्त समय बचता है, उसे वहाँ बैठकर बर्बाद नहीं करती। हम सभी किताबें पढ़ते रहते हैं या फिर कम्प्यूटर सिखाने वाले भाई हमें कम्प्यूटर के बारे में बताते रहते हैं।

सिलाई प्रशिक्षण

ममता गौड

मेरा नाम ममता गौड़ है। मैं जनमैत्री संगठन से अप्रैल 2018 में जुड़ी। मैं गाँव गल्ला में 21 अप्रैल 2018 से महिलाओं और लड़कियों को सिलाई सिखा रही हूँ। सिलाई सीख कर महिलाएं कुछ रोजगार करना चाहती हैं। सीखने के बाद हम अपने घर में भी सिलाई कर सकते है। हमने गल्ला गाँव में महिलाओं और बहनों को समीज, पेटीकोट, सूट–सलवार, ब्लाउज आदि की सिलाई करना सिखाया। बाड़ेछीना क्षेत्र से चन्द्रा और गरिमा आये और उन्होंने हम सभी को प्रशिक्षण दिया। मैं महिलाओं और किशोरियों को फ्रॉक, विभिन्न प्रकार की मैक्सी, कमीज, चूड़ीदार आदि कपड़ो की सिलाई सिखाना चाहती हूँ। वे पुरूषों के कपड़े जैसे कमीज व कुर्ता सिलना भी सीखें। मुझे जनमैत्री संगठन में जुड़ कर लोगों से मिलने का मौका मिला। मैं अपने गाँव की महिलाओं और किशोरियों को शिक्षित करना चाहती हूँ। उन्हें सिलाई–बिनाई के द्वारा रोजगार करके आय–वृद्धि करना सिखाना चाहती हूँ।

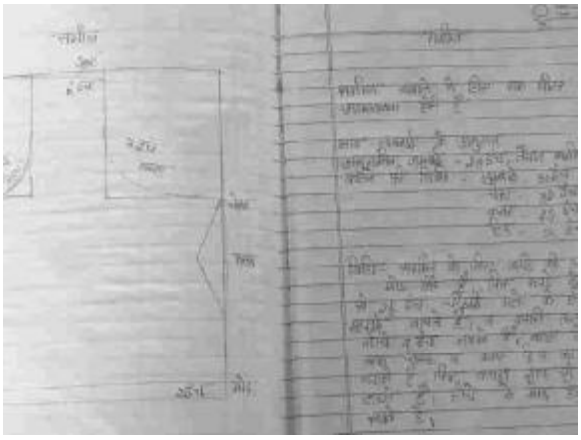

चिंता–चिता से बढ़कर

केदार सिंह कोरंगा

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में शेर सिंह नाम का आदमी रहता था। बचपन से ही उसका शरीर भारी होने लगा। जब युवावस्था में पहुँचा तो माता–पिता का देहान्त हो गया। वह घर में अकेला ही रहने लगा। जो भी रूखी–सूखी बना पाता, वही खा लेता। उसका जीवन अकेलेपन में गुजरने लगा। धीरे–धीरे उसका शरीर और भी मोटा हो गया। भारी शरीर के कारण उसे चलने–फिरने में परेशानी होने लगी। वह गाँव के अन्य हमउम्र लोगों को काम–धंधा करते, दौड़भाग करते हुए देखता तो और भी ज्यादा परेशान हो जाता। वह सोचने लगा कि इस मोटापे का क्या समाधान किया जाए? गाँव के हमउम्र लोग उसकी कुशल लेने आया–जाया करते थे।

बहुत परेशान होने पर एक दिन शेर सिंह ने ग्रामवासियों को अपने मोटापे की समस्या स्पष्ट रूप से बताई। कहा कि वह बहुत परेशान है। कहीं चल–फिर नहीं सकता। खाना बनाने में भी परेशानी होती है। उसने निवेदन किया कि इस समस्या का समाधान ढूँढ़ कर बतायें। उसकी परेशानी को समझते हुए गाँव के कुछ लोगों ने आपस में सलाह–मशविरा किया। तय हुआ कि अगली सुबह कुछ लोग चारों दिशाओं में जाकर पूछताछ करेंगे।

अगले दिन गाँव के कुछ लोग चारों दिशाओं में गये। कोई ज्योतिषियों तो कोई वैद्यों के पास पहुँचे। शेर सिंह की परेशानी बताई। इस चर्चा का कोई ठोस समाधान नहीं निकला। शेर सिंह का शरीर दिनों–दिन भारी होता गया। घर से निकलना दूभर हो गया। वह कमरे के अन्दर लेटा–लेटा परेशान होता रहा।

एक दिन गाँव में एक सन्यासी आया। वह गाँव के मन्दिर में रहने लगा। उसने गाँव के लोगों से खाना बनाने के लिए लकड़ी, बर्तन व भोजन की सामग्री माँगी। ग्रामवासियों ने सन्यासी की सेवा की। उसकी मदद करते हुए बर्तन–भोजन इत्यादि सभी सामग्री भी दे दी। शाम के समय गाँव के सभी लोग सन्यासी की सेवा करते। उसकी कुटिया में भजन–कीर्तन किया करते। एक दिन शेर सिंह के हमउम्र साथियों ने सन्यासी से उसके मोटापे के कारण हो रही परेशानी की बात कही। सन्यासी को बताया कि वह हिलडुल नहीं पाता, खाना नहीं बना पाता तथा चलना–फिरना भी दूभर हो गया है। सन्यासी ने बड़े ध्यान सभी बातों को से सुना।

एक दोपहर सन्यासी शेर सिंह के घर पहुँचा। शेर सिंह ने सन्यासी को देखकर उनका स्वागत किया और कहा कि ''महाराज मैं मोटापे के कारण चल फिर नहीं सकता हूँ। मैं काफी परेशान हूँ। अपने और आपके लिए भोजन नहीं बना सकता। आप पानी पीकर ही गुजारा कर लीजिए।'' सन्यासी मौन हो गया। वह सोचने लगा कि क्या जवाब दे।

कुछ देर के बाद सन्यासी ने ज्योतिषज्ञान का सहारा लिया। शेर सिंह की हस्तरेखा देखी। उसके माथे की रेखाएं पढ़ने लगा। सन्यासी ने शेर सिंह से कहा कि ''मोटे साहब! अब आपकी उम्र कम ही बची हुई है। आपकी मृत्यु अगले वर्ष इसी तिथि को हो जायेगी।'' इसके बाद सन्यासी उठा और मन्दिर की ओर चल पड़ा। मन्दिर में पहुँचने के बाद उसने अपना सामान उठाया तथा गाँव से बाहर चल दिया।

अब शेर सिंह अपनी जिंदगी की चिन्ता में डूब गया। वह सोचता कि उम्र कम होती जा रही है। चिंता के कारण उसे एक–एक दिन भारी लगने लगा। धीरे–धीरे उसका शरीर दुबला होता गया। अब वह चलने–फिरने के योग्य हो गया। जो भी भोजन करता, चिन्ता के कारण उसके तन को लगता ही नहीं था।

एक वर्ष बीत गया। सन्यासी के द्वारा बतायी गयी मृत्यु की तिथि आ गई। शेर सिंह चिन्ता में डूबा हुआ था। तभी सन्यासी शेर सिंह के घर पहुँच गया। शेर सिंह ने सन्यासी को देखते ही उत्सुकता से कहा, ''महाराज! आपके कहे अनुसार आज मेरी मृत्यु की तिथि आ गई है लेकिन मैं तो अभी भी जिन्दा हूँ।'' सन्यासी हँसने लगा। उसने कहा, ''मोटे साहब! आज आप अपनी हालत देख रहे हैं। इतना दुबलापन कैसे आ गया? आप हिल–डुल नहीं सकते थे, खाना नहीं बना पाते थे, चल–फिर नहीं सकते थे। आज चल–फिर रहे है, सभी काम कर लेते हैं। चिन्ता–चिता से बढ़कर होती है।'' शेर सिंह को सन्यासी का मकसद समझ में आ गया। सन्यासी गाँव से चला गया और फिर कभी वापस नहीं आया। सन्यासी ने शेर सिंह का जीवन बदल दिया था। उसे मृत्यु के मुख से खींच कर बाहर ले आया था। अब शेर सिंह मेहनत करता। धीरे–धीरे उस का शरीर चुस्त–दुरूस्त हो गया। वह आनन्दपूर्वक अपना गुजारा करने लगा।

मेरा कम्प्यूटर

विनिता गौड

इस वर्ष मैंने कक्षा दस की परीक्षा दी थी। मेरे पास कुछ खाली समय था। इसी बीच मुझे पता चला कि गाँव में कम्प्यूटर की कक्षाएं चल रही है। गाँव में यह सुविधा पहली बार आई थी। मैंने भी कम्प्यूटर की कक्षा में जाना शुरू कर दिया। हम सुबह छः बजे घर से आ जाते है। कम्प्यूटर केन्द्र तक साढ़े सात बजे पहुँचते हैं। हमें कम्प्यूटर चलाने के लिए सिर्फ आधा घंटे का समय मिलता है। इससे हमें कम सीखने को मिलता है। पहले मुझे कम्प्यूटर के बारे में कुछ पता नहीं था। लेकिन केन्द्र में जाने के बाद ज्ञान बढ़ा। पहले की–बोर्ड में अंगुलियाँ चलानी नहीं आती थीं लेकिन अब थोड़ा–थोड़ा अभ्यास हो गया है। अब मुझे कम्प्यूटर की उपयोगिता के बारे में भी ज्ञान हुआ है। अब आगे कम्प्यूटर के प्रति अपने ज्ञान को और अधिक बढ़ाऊंगी।

प्यारी माँ

चन्दा रौतेला

मेरी माँ, तू कितनी प्यारी हैं।
जग है अंधियारा ,तू उजियारी है।
शहद से मीठी तेरी बातें।
आशीष तेरा जैसे हो बरसातें।

डाँट तेरी है मिर्ची से तीखी।
तुझ बिन जिंदगी है कुछ फीकी।
माँ तू तो है भोली–भाली।
सबसे सुन्दर सबसे प्यारी।

गढ़वाल में भ्रमण

कमला नयाल

इस वर्ष जनमैत्री संगठन के माध्यम से हम चार दिन के भ्रमण में गढ़वाल गये थे। इस भ्रमण में चार महिलाएं, दो किशोरियाँ और चार पुरूष शामिल थे, साथ में थे हमारी गाड़ी चलाने वाले भैय्या।

पहले हम गल्ला गाँव से भवाली, गरमपानी, रानीखेत, चौखुटिया होते हुए गैरसैंण पहुँचे। मैंने गैरसैंण और आदिबद्री के बीच बहुत घना जंगल देखा। मन में विचार आया कि जंगल में न जाने कितने जानवर होंगे। पानी होगा, शुद्ध हवा होगी। इसके बाद हम कर्णप्रयाग और रूद्रप्रयाग होते हुए ऊखीमठ पहुँचे।

ऊखीमठ में हम तीन दिन रूके। वहाँ हम जगह–जगह गाँवों में घूमे। इन गाँवों में सिलाई–बुनाई का कार्य हो रहा था। लोग बहुत दूर–दूर से आये हुए थे। दूसरे दिन हम गाँवों में संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों को देखने गये। डुंगर गाँव के ब्योल्दा तोक में लोगों ने पहले कभी आलू नहीं लगाया था लेकिन इस बार संस्था के प्रयासों से उन्होंने खेतों में आलू लगाये। जो बहुत अच्छी तरह से उगे थे। ग्रामवासियों ने आलू की गुड़ाई, पानी डालना, उकेर भरना आदि सभी काम बहुत अच्छे तरीके से किये थे। यह देखकर हमें बहुत अच्छा लगा।

तत्पश्चात् हम हिमालय फल एवं खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण केन्द्र देखने ऊखीमठ बाजार में गये। वहाँ पर जूस की दुकान थी। जिस प्रकार जनमैत्री संगठन ने भोजन की सतरंगी थाली का नाम दिया, उसी प्रकार ऊखीमठ में हमने सात रंगों के जूस देखे। ये जूस अलग–अलग फल–फूलों से बने थे। जैसे– बुराँश, नींबू, माल्टा, संतरा, ऑवला, नारंगी इत्यादि। अचार भी कई प्रकार के थे।

अगले दिन हम मद्महेश्वर होते हुए चोपता गये। वहाँ पर स्थानीय लोग नींबू, माल्टा, संतरा, आंवला इत्यादि फलों को बेचकर रोजगार चलाते हैं। मण्डल से होते हुए हम महानंद बिष्ट जी का काम देखने ग्वाड़ गाँव में आए। महिला संगठन से गाँव में हो रहे कार्यों के बारे में चर्चा की। फिर ग्वाड़ से होते हुए गोपेश्वर में ठहरे। मुझे वहाँ के लोगों का बोलना बहुत अच्छा लगा। वहाँ की बोली कुमाऊँ क्षेत्र से अलग थी। हमें उनका बोलना बहुत अच्छा लगता था।

हमारा यह भ्रमण बहुत अच्छा रहा। मैं पहली बार गढ़वाल गयी। मुझे बहुत कुछ सीखने और देखने को मिला। गोपेश्वर में थोड़ा–बहुत घूमे भी। वहाँ का बाजार बहुत बड़ा था। जब हम मण्डल गाँव में गये तो लक्ष्मी दीदी ने हमें घर पर बुलाया। उन्होंने अपने घर के सदस्यों की तरह मान कर हमें खूब सम्मान दिया। विभिन्न प्रकार के भोज्य–पदार्थ खिलाये। मण्डल गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र भी चल रहा था। इस केन्द्र को लक्ष्मी दीदी की बहन चलाती है। केन्द्र में हम सभी को बहुत अच्छा लगा।

किशोरियाँ और कम्प्यूटर

हरिप्रिया लोधियाल

मैंने एक मई 2018 से कम्प्यूटर सीखना शुरू किया। आज हमारे देश में कम्प्यूटर एक सर्वश्रेष्ठ मशीन के रूप में स्थापित है। कम्प्यूटर के उपयोग से सभी क्षेत्रों में कार्य की गति और गुणवत्ता में सुधार आया है। कम्प्यूटर से मनुष्य को अनेक लाभ मिल रहे हैं। कम्प्यूटर केन्द्र में पहले दिन से ही हमें क्रम से नईं–नईं चीजें सिखायी गयीं। हमें पहले कम्प्यूटर में ''टाइपिंग मास्टर प्रो'' सिखाया गया ताकि हमें लिखित कार्य करने में कोई परेशानी न हो।

कम्प्यूटर एक ऐसा यंत्र है जो मुख्य रूप से शिक्षा तथा व्यापार–सम्बन्धी खोजों के लिए तथा अन्य रोजगारपरक कार्यों के लिए प्रयोग में लाया जाता है। हमने केन्द्र में जाकर यह भी जाना कि आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पहले चीनी शिक्षाविदों ने गणना के लिए ''अबैकस'' नामक एक यंत्र बनाया था। वर्तमान में गणना करने वाली मशीनों में एकमात्र कम्प्यूटर ही है जिसे सर्वोच्च स्थान मिला है। मैं कम्प्यूटर सीखने के बाद खुद ऐसा कुछ काम करना चाहती हूँ ताकि जो सीखा उसका लाभ उठा सकूँ।

मुझे कम्प्यूटर में तरह–तरह की फाइल्स बनाना बहुत अच्छा लगता है पर समय नहीं मिल पाता। केन्द्र में केवल तीन ही कम्प्यूटर हैं। उसमें आधे घंटे तक एक और फिर दूसरे की बारी आती है। इस वजह से पूरा समय नहीं मिल पाता। मैं चाहती हूँ कि कम्प्यूटर में ठीक से समय मिले ताकि हम कुछ और सीख सकें। कम्प्यूटर कम होने से समस्या बढ़ जाती है। अगर कुछ और कम्प्यूटर हों तो सुविधा का लाभ ठीक से उठा सकेंगे।

भारत के प्रथम सुपर कम्प्यूटर का नाम 'परम' है। इसका विकास सी–डक ने किया था। हम कम्प्यूटर का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में कर सकते हैं। इसका सर्वाधिक उपयोग व्यापार, औद्योगिक, शिक्षा, संचार, यातायात और मनोरंजन के क्षेत्रों में किया जाता है। भारत में पहला कम्प्यूटर 1955 में कोलकता में लगाया गया था। जिसका नाम था HEC-2M।

हमें गल्ला केन्द्र में कम्प्यूटर के विभिन्न हिस्सों के नाम और कार्यों से परिचित कराया गया। यह भी समझ में आया कि कम्प्यूटर कोई भी कार्य स्वयं नहीं करता बल्कि प्रोग्राम के आधार पर हमारे निर्देशों पर ही कार्य करता है। हर प्रोग्राम को कोई भी कार्य करने के लिए इनपुट डाटा की जरूरत होती है। माउस, की–बोर्ड आदि के द्वारा हम कम्प्यूटर को निर्देश देते हैं। कम्प्यूटर में सी.पी.यू के हिस्से जैसे कि प्रोसेसर हमारे द्वारा दिये गए आदेशों का पालन करते हैं, परिणाम को मॉनीटर में दिखाते हैं। इसका परिणाम प्रिंटर, सी.डी., पेन–ड्राइव आदि के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। कम्प्यूटर का उपयोग अन्य क्षेत्रों में भी किया जाता है। जैसे बैंकिंग, प्रकाशन, डिजाइनिंग, कला, वैज्ञानिक अनुसंधान आदि। मैं इन क्षेत्रों में प्रयासरत रहना चाहती हूँ।

अनौपचारिक शिक्षा भी जरूरी

भारती लोधियाल

मैंने इसी वर्ष कक्षा बारहवीं पास की है। मैं सतबुँगा गाँव के दुत्कानेधार तोक में रहती हूँ। हमारे गाँव में कम्प्यूटर की सुविधा पहली बार आयी है। संस्था द्वारा दी गई इस सुविधा से हमें कम्प्यूटर सीखने का अवसर मिला। हमने 01.06.2018 से केन्द्र में आना शुरू किया। मैं रोज सुबह पाँच किलोमीटर पैदल चलकर कम्प्यूटर सीखने आती हूँ। कभी–कभी गाड़ी में आते हैं अन्यथा पैदल चल कर आना होता है। इस सुविधा से हमें बहुत लाभ हुआ है। पहले हमने कम्प्यूटर के बारे में सुना था, देखा न था। अब हमने कम्प्यूटर पर काम करना सीखा है। मैं और मेरे साथी रोज केन्द्र में आते हैं। पहले हमें टाइपिंग करना सिखाया गया और इसी दौरान हमने अपनी उंगलियों को कम्प्यूटर में काम करने के लिए सेट किया। अब हमें टाइपिंग का अच्छा अभ्यास हो गया है।

जीवन की राहें

संजय सिंह मेवाड़ी

मैंने अभी बी.ए. फाइनल की परीक्षा दी है। मैं गल्ला गाँव में कम्प्यूटर संचालक की भूमिका निभा रहा हूँ। मैं एक वर्ष से अधिक समय तक कम्प्यूटर का प्रशिक्षण ले चुका हूँ। मैंने एक वर्ष तक आई.टी.आई. किया और छः महीने हल्द्वानी में कम्प्यूटर ट्रेनिंग ली है।

संगठन में जुड़ने से पहले मैंने कई बार इस विषय पर चर्चा सुनी थी परन्तु पूर्णरूप से मुझे इसके बारे में ज्ञान नहीं था। गल्ला गाँव के निवासी श्री महेश गलिया जी ने कुछ माह पूर्व संगठन के बारे में मुझ से चर्चा की। वे संगठनों से कई वर्षों से जुड़े हैं। उन्होंने संगठनों के महत्व और कम्प्यूटर शिक्षण केन्द्र के बारे में मुझ से कई बार बातचीत की। साथ ही नई योजनाओं पर भी मुझ से रोजाना चर्चा करते रहे। इससे मेरा रूझान संगठन की ओर बढ़ा। बाद में मैंने कम्प्यूटर शिक्षा देने की पहल की और केन्द्र चलाने लगा।

कम्प्यूटर केन्द्र में दो ग्रुप बना कर शिक्षा देता हूँ। रोजाना सुबह छः से साढ़े आठ बजे तक एक ग्रुप के बच्चे आते हैं। दूसरा ग्रुप शाम को चार से सात बजे तक रोजाना काम करता है। इस दौरान मुझे कई नये अनुभव हुए। नयी चीजें सीखने और साझा करने का मौका मिला। मैंने कम्प्यूटर के विभिन्न हिस्सों के उपयोग की जानकारी सभी शिक्षार्थियों को लिखित और मौखिक रूप से दी। कम्प्यूटर खोलना और बंद करना सिखाया। टाइपिंग टेस्ट/टाइपिंग मास्टर का उपयोग करके की–बोर्ड पर शिक्षार्थियों के हाथों को टाइपिंग के लिए अभ्यस्त किया। साथ ही पेंटिग प्रोग्राम का उपयोग कर के माउस में सरलता से हाथ रखने का अभ्यास भी कराया। उसके बाद माइक्रो आफिस वर्ड का उपयोग कर के विभिन्न फाइलें बनवाईं।

इन नितांत नयी गतिविधियों को सीखने में शिक्षार्थियों को कई मुसीबतों का सामना

करना पड़ा परन्तु उन के जोश और कम्प्यूटर के प्रति लगाव ने इन समस्याओं को छोटा बना दिया। शिक्षार्थियों के जोश और कम्प्यूटर के प्रति लगाव से इस केन्द्र की उपयोगिता को ग्रामवासियों के समक्ष एक अच्छे परिणाम के रूप में लाने में हम सफल रहे।

आज गाँव का हर व्यक्ति इस केन्द्र के बारे में चर्चा करता है। वह जानकारी लेने से पीछे नहीं हटता। इस केन्द्र के संचालन के दौरान हमें कई अच्छे परिणाम देखने को मिले तो कई बार कटु अनुभव भी हुए। यह कार्यक्रम ग्रामवासियों, खासकर महिला संगठनों के अनुरोध पर शुरू किया गया। इस वजह से ग्रामवासी केन्द्र में विशेष रूचि रखते हैं। बच्चे भी व्यस्त रहते हैं। दूर–दूर से किशोरियाँ सीखने आ रही हैं। फलतः यह केन्द्र मन में संतोष पैदा करता है।

हिमाचल भ्रमण : किसान की कलम से

महेश गलिया

इस वर्ष गर्मी के मौसम और फल–सीजन की व्यस्तता के बीच मुझे देवभूमि हिमाचल के कुछ क्षेत्रों को देखने का अवसर मिला। जो मैंने देखा और समझ पाया उसी को नंदा के पाठकों से साझा करने की कोशिश कर रहा हूँ। मेरे घर गल्ला गाँव, जिला नैनीताल से शिमला शहर तक पहुँचने का सफर शान्तिपूर्ण रहा। जब शिमला से आगे ठिन्योग, नारकन्डा के क्षेत्र में पहुँचे तो चेरी के लाल फल, देवदार प्रजाति सरीखे वनों के सुन्दर क्षेत्र, गाँव–जंगलों के मध्य दूर–दूर तक फैले हुए लाल व हरी छतों वाले मकान, गाँव–गाँव तक लिंक सड़कें, व्यवस्थित एवं सुप्रबंधित सेब के बगीचे और उनके ऊपर लगे हुए हेलनेट बहुत सुन्दर दिखाई दे रहे थे।

हम दो साथी 20.05.2018 को कार्यशाला के एक दिन पूर्व ही नारकन्डा पहुँच गये। दिन–भर क्षेत्र का पैदल भ्रमण किया। कई ग्रामीणों से अनौपचारिक बातचीत की। गाँव–बगीचों और वहाँ के जंगलों के भ्रमण का प्रयास किया।

21 मई से 23 मई 2018 तक होटल हाटू में एक कार्यशाला हुई। हिमालयन ऐपल इकोनोमिक्स पर केन्द्रित इस कार्यशाला में सेब के उत्पादन से सम्बन्धित आठों राज्यों से प्रगतिशील बड़े किसान, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, आई. एम. आई., एफ. ए. ओ., पी. जी. ए. अधिकारी, ऐक्सपोर्टर, बैंक–कर्मी आदि उपस्थित थे। सभी ने सेबों के उत्पादन की वर्तमान परिस्थितियों, बाजार, विश्व–सेब प्रतिस्पर्धा से सम्बन्धित मुद्दों पर बातचीत की।

अधिकांश चर्चाओं में हाईडेन्सी टेक्नौलाजी को अपनाने और उसकी खूबियों को केन्द्रित किया गया। हाईडैन्सी टेक्नौलाजी ऐडवाइजर ने दमखम के साथ अपना पक्ष रखा। कुछ सफलता–प्राप्त सम्पन्न किसानों द्वारा भी उक्त गुणगान किया गया।

द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र में कार्यशाला स्थल से लगभग बीस किलोमीटर दूर बसे हुए थानेदार गाँव में विजय स्टोक नाम के किसान के एच. डी. टेक्नौलाजी द्वारा सफल हुए गार्डन का भ्रमण कराया गया। उक्त बगीचे में बहुत सुन्दर प्रबन्धन और फसलें है। एच. डी. टेक्नौलाजी वाले सेब के करीब सौ पेड़ों की अनुमानित लागत पन्द्रह लाख रुपया आँकी गयी है। इस पर लगातार निरीक्षण की आवश्यकता रहती है। यह एम सीरीज के रूट पर लगाया

जाता है। एम–9, एम–11, एम–16 अलग–अलग स्वभाव के रूट हैं। इन्हें नियमित पानी की आवश्यकता होती है। वैसे भी बेहतर बागवानी हेतु भूमि में नमी की मात्रा 66 प्रतिशत मानी गयी है। जिस तरह से कार्यशाला में रूट–स्टाक पर विकसित सेबों की प्रजाति पर जोर हो रहा था, रसायन स्प्रै का बखान हो रहा था, उससे मुझे महसूस हुआ कि एक आयातित टेक्नौलाजी थोपने की वकालत हो रही है। संभवतः कार्यशाला रसायन–उद्योग को बढ़ावा देने की कवायद होगी, यह सोचते हुए मुझे लगातार यह महसूस हुआ कि इन सबके बीच हमें अपने प्राकृतिक संसाधनों और ग्राम–परितंत्र पर भी नजर डालनी चाहिए।

हिमाचल और कश्मीर के सेब का बखान हमेशा होता रहा है। यह जायज भी है। प्रकृति ने सुन्दर भौगोलिक नेमतों से इस क्षेत्र को नवाजा है। स्थानीय निवासी प्रगतिशील सोच वाले हैं। हिमाचल की खेती नेपाली मजदूरों पर आधारित है। हर किसान एक मौन–बॉक्स का सीजन में प्रति माह पेमेंट करता है। बारह से चौदह तरह के रसायन, इन्सैक्टिसाइड–पैस्टीसाइड, स्प्रे होते हैं। प्रति वर्ष पुनिना व हेलनेट डालने का कार्य मजदूरों के माध्यम से किया जाता है।

तीन बीघा के स्वामित्व वाले कमजोर किसानों को सरकार ने पाँच बीघा जमीन प्रदान की है। जमीन की गुणवत्ता उत्तराखण्ड से अच्छी है। जहाँ–जहाँ सेब की खेती हो रही है, वहाँ उबड़–खाबड़ जमीन नहीं है, गहरी मिट्टी–युक्त भूमि है। लेकिन वर्तमान में जमीन का पोषण कमजोर है जो गहरी प्रूनिंग के पश्चात् भी साफ दिखाई देता है। बागानों के अनुपात में पशुधन भी कमजोर है। कुछ नौजवानों ने कम्पोस्ट खरीद कर डालने की बात कही। खाद को थावलों के माध्यम से देने का प्रचलन है। बागानों में दाल, सब्जी उगाने का प्रचलन नहीं है। बड़े–बड़े बाग हैं। उनका लागत–खर्च भी उत्तराखण्ड की तुलना में कहीं ज्यादा है।

कुछ मित्रों ने बताया कि विगत वर्ष चालीस–पचास तोते मार गिराये। तोते सेब के फलों को भारी नुकसान पहुँचाते हैं। हाटू मन्दिर की ऊँचाई दस हजार फिट पर है। जंगल और गाँव में भ्रमण के दौरान मुझे उत्तराखण्ड की फल–पट्टी जैसी जैव–विविधता यानि नाना प्रकार के पेड़, झाड़ियाँ, वनस्पतियाँ, जड़ी–बूटियाँ, कीड़े–मकोड़े आदि नहीं दिखाई दिये। हाटू की चोटी तक फैले हुए जंगल में न तो चिड़ियाँ का कोलाहल था। न ही सात कव्वों, एक बांज एवं एक–दो भूरी मुसिया चिड़िया के अलावा मुझे कुछ दिखाई दिया। स्थानीय काश्तकारों ने बताया कि रीछ और चमगादड़ भी बगीचों को नुकसान करते हैं। जहाँ हमारे गल्ला क्षेत्र में जेठ की दुपहरी में भी जंगल से कई प्रकार की चिड़ियाँ की चहचहाहट सुनाई देती है, गाँव में ही नाना प्रकार के पक्षियों के दर्शन होते हैं, इस सुन्दर मनोरम क्षेत्र में इतने कम पक्षी होने का क्या कारण हो सकता है? साथ ही सफेद हेल नटों से सुशोभित लम्बे–चौड़े दूर–दूर तक फैले हुए बागानों को अन्दर से देखने पर पता चला कि पेड़ों में फल कम हैं। जब कि हमारा फल उत्पादक क्षेत्र लम्बे अरसे से वर्षा न होने, आसपास किसी अच्छी नदी, झील न होने के बावजूद भी किसानों की आम जरूरत के लायक फल पैदा कर लेता है।

हालाँकि पैंतीस वर्षों में उत्तराखण्ड के रामगढ़ धारी क्षेत्र में भी इस वर्ष यह पहला वाकया है कि फल बहुत कम हुआ है। इस का मुख्य कारण सोलह मार्च 2018 को मौसम की करवट और वर्षा–ओला गिरना, रात में पाला गिरना, विगत वर्ष अत्यधिक फल आना रहा। लम्बे समय से वर्षा न होने के कारण द्रव्य अवस्था में पौधों द्वारा पोषणयुक्त भोजन ग्रहण न कर पाने से पेड़ों की आन्तरिक ताकत बाधित हुई और इस वजह से भी फल कम आये।

इस पूरे भ्रमण एवं चिंतन के पश्चात् समझ में आया कि जलवायु–परिवर्तन का प्रभाव सभी स्थानों पर है। हिमाचल भ्रमण के बाद उत्तराखण्ड में बागवानी के परिपेक्ष्य में मेरा मानना है कि यहाँ पर किसानों को एकजुट होकर जागरूक होने की जरूरत है। उत्तराखण्ड में गोबर के प्रबन्धन व फल–पौधों की प्रूनिंग की ओर ध्यान देकर मार्केटिंग करना जरूरी है। इस मुद्दे पर सभी काश्तकारों को संगठनात्मक रूप से सोचना होगा। उत्तराखण्ड में रासायनिक जहर–मुक्त बागवानी को जीवित रख कर, लोगों को उससे रूबरू करने और इस विशेषता का प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता है।

पलायन हिमाचल में भी है पर कुछ पढ़े–लिखे युवा सेब की खेती में संगठनात्मक रूचि रख कर उसे आगे बढ़ा रहे हैं। उत्तराखण्ड में ऐसी पहल कम दिखाई देती है।

महिला मेले की आख्या

अनिला पंत, पुष्पा पुनेठा

दन्या, चलमोड़ीगाड़ा में आठ मार्च 2018 को संस्था के प्रांगण में महिला मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में सोलह गाँवों की दो सौ चौंतीस महिलाओं (गौली, दन्या, डसीली, उकाल, रूवाल, धारागाड़, बषाण, टकोली, कुलौरी, थली, मुनौली, कोट्यूड़ा, चलमोड़ीगाड़ा, मल्ली दन्या व दन्या बाजार) ने भाग लिया। साथ ही, क्षेत्र पंचायत सदस्या, जिला पंचायत सदस्या एवं कुछ पत्रकार भी महिला मेले में शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन अनिला पंत ने किया। पुष्पा पुनेठा ने संपूर्ण कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाई। कार्यक्रम का शुभारम्भ लगभग बारह बजे हुआ। जिला पंचायत सदस्या श्रीमती निर्मला भैंसोड़ा को सभा की अध्यक्षा बनाया गया। उत्तराखण्ड महिला परिषद् की अनुराधा को मुख्य अतिथि बनाया गया। मुख्य अतिथि और अध्यक्षा ने दीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने बैज लगाकर सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस के बाद गौली गाँव की महिलाओं ने प्रार्थना की।

गौली गाँव के संगठन की अध्यक्षा श्रीमती माधवी पाण्डे ने महिलाओं द्वारा किये गये कार्यों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बन्दर व सुअरों ने खेती चौपट कर दी है। महिलाओं ने विकास खंड से लेकर अल्मोड़ा, दिल्ली तक अनेक उच्च अधिकारियों, नेताओं और वन विभाग के समक्ष अनेक सभाओं में जंगली जानवरों की समस्याएं रखी लेकिन किसी ने भी समाधान नहीं किया। ग्रामवासी स्वयं ही खेती बचा रहे हैं। फिर भी समस्याएं आ रही हैं। सरकार द्वारा आधार कार्ड व पैन कार्ड बनाने को कहा गया लेकिन सरकारी दफ्तरों और बैंकों में जाकर महिलाएं परेशान हो जाती हैं। इसके लिए भी हम समाधान चाहते हैं। गाँवों में संस्था के माध्यम से कम्प्यूटर केन्द्र खुल रहे हैं। इन केन्द्रों के खुलने से सभी ग्रामवासी खुश हैं। नई बहुएं, बच्चे सभी कम्प्यूटर सीख रहे हैं। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान और संस्था ने हमें आगे बढ़ाया, अन्य कोई महिलाओं की कुछ मदद नहीं करता है।

डसीली गाँव की निवासी धनुली दीदी ने बताया कि ग्राम प्रधान ने महिला संगठन के साथ मिलकर बहुत अच्छी व्यवस्था की है। ग्राम शिक्षण केन्द्र के आँगन में टाइल बिछाये हैं। मन्दिर निर्माण, रास्तों की सफाई, चैकडैम निर्माण के कार्यों में महिलाओं को भी काम दिया जाता है और बराबर मजदूरी दी जाती है। ग्राम शिक्षण केन्द्र भी अच्छा चलता है। शिक्षिका अच्छा काम करती है।

बसन्ती बहन ने पलायन के बारे में बताया। उन्होंने अपना पूर्व परिचय देते हुए दन्या क्षेत्र में पहले और आज की सामाजिक स्थिति की तुलना की। उन्होंने कहा कि आज लोग खेती नहीं करना चाहते। बेटे और बहुएं अपने परिवारों को लेकर सड़कों के किनारे किराये में कमरे ले कर रहना पसंद करते हैं। उत्तराखण्ड में बहुएं खेती–जानवरों से जुड़े हुए काम करना नहीं चाहती लेकिन गुजरात में महिलाएं गाय पालकर अपनी आजीविका बढ़ा रही हैं। महिलाएं स्वयं बनाई हुई चीजों को किसान मेलों में बेच रही हैं। वे मेले में बेचने के लिए तीन ड्रमों में दही लायी थी। उन्होंने वहीं पर मठ्ठा बनाया। मक्खन और मठ्ठा बेचकर तीस हजार रुपया कमाया। गुजरात में महिलाएं अपने पैसों से घर चलाती हैं। उत्तराखण्ड में भी ऐसी ही पहल करने की जरूरत है।

कोट्यूड़ा गाँव की नन्दी देवी ने अपने संगठन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महिलाओं ने कोष के पैसे से सामग्री खरीदी है। गाँव में पानी की टंकी बनी है। महिलाएं दूध का व्यापार करती हैं लेकिन बाजार में दूध की कीमत बहुत कम है। दुकानों में बाइस रुपया लीटर से पच्चीस रुपया लीटर तक के मूल्य पर दूध बिकता है। डेरी में उसी दूध की कीमत छत्तीस रुपया प्रति लीटर है। आज महंगाई बहुत बढ़ गयी है, लोगों की जरूरतें भी बढ़ी हैं। इस कारण, पैसे की जरूरत लगातार बनी रहती है।

टकोली गाँव की गंगा देवी ने ग्राम शिक्षण केन्द्र के बारे में बताया। केन्द्र खुलने से बच्चों में काफी उत्साह जागा और परिवर्तन आया है। बच्चे स्कूल से आकर सीधे केन्द्र में चले जाते हैं। शिक्षिका का कार्य बहुत अच्छा है। वह नियमित तौर से केन्द्र खोलती है। बच्चों के साथ लगातार शिक्षा संबंधी गतिविधियाँ करती है। साथ ही उन्होंने लोक–गीतों की तर्ज पर एक भजन गाया।

दन्या के पत्रकार गणेश भाई ने कहा कि महिलाओं ने अच्छे कार्य किये हैं। संस्था द्वारा गाँव की सभी महिलाएं आगे बढ़ी है। उन्होंने संस्था की बहनों को धन्यवाद दिया और कहा कि

इन्होंने गाँव में परिवर्तन की अलख जगायी है। उत्तराखण्ड महिला परिषद् की टीम जागेगी तभी उत्तराखण्ड का विकास होगा। उन्होंने निवेदन किया कि महिला संगठनों की गोष्ठियों में कभी–कभी पत्रकारों को भी बुलायें। गाँवों में पंचायतों के माध्यम से योजनाएं आती हैं, उनका लाभ लें। जब ग्राम–प्रधान सक्रिय होंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।

गौली गाँव की महिलाओं ने घरेलू हिंसा के बारे में एक नाटक किया। तत्पश्चात् अल्मोड़ा से आयी हुई रमा जोशी ने हनुमान की कहानी सुनाई। महिलाओं को हनुमान की तरह जागने और अपनी ताकत का इस्तेमाल करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि किसी कार्य में चुप न बैठें, सक्रिय रहें और कर्मठ बनें। महिलाओं के लिए पचास प्रतिशत आरक्षण है, इसका फायदा उठाना चाहिए।

मुनौली गाँव से आयी हुई तनुजा ने शिक्षण केन्द्र, संगठन की गोष्ठी और कम्प्यूटर के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि मुनौली गाँव में छः माह तक कम्प्यूटर शिक्षा का कार्यक्रम चला। बच्चों ने कम्प्यूटर पर काम करना सीखा। अभी भी गाँव में कम्प्यूटर की जरूरत है।

अल्मोड़ा से आयी हुई अनुराधा ने सभी महिलाओं को आठ मार्च, महिला दिवस, की बधाई दी। सभी का स्वागत किया। कुछ समय पहले दिवंगत हुई हरिप्रिया पंत के कार्यों को याद करते हुए श्रृद्धांजलि दी। यह भी बताया कि हरिप्रिया जी ने महिलाओं में जागरूकता लाने के लिए बहुत मेहनत की थी। उन्होंने कहा कि दन्या क्षेत्र की महिलाओं के लिए आटी गाँव में महिलाओं द्वारा संचालित होने वाला एक रेस्टोरेंट खुल रहा है। महिलाएं सब्जी, दालें, दही, दूध, घी, मठ्ठा आदि वहाँ पर बेच सकती हैं। यह जगह महिलाओं के अनुरोध पर बनी है। क्षेत्र के समस्त ग्रामवासी इस सुविधा का इस्तेमाल करें। जो सब्जी, दालें बाजार में सस्ती बिकती हैं, अपने हाथ से बेचने में उस चीज की अच्छी कीमत मिल सकती है। बसंत भाई ने

इस कार्य में खूब मेहनत की है। आज महिलाएं रोजगार बढ़ाने की बातें कहती हैं। इस सुविधा से समस्त क्षेत्र को लाभ होगा, ऐसी हमारी आशा है।

धारागाड़ गाँव से आयी हुई खष्टी देवी ने महिला संगठन की बातें बताई। उन्होंने कहा कि महिलाओं ने जंगल बचाया है। हर माह संगठन की गोष्ठी होती है। ग्राम शिक्षण केन्द्र अच्छा चल रहा है। अब गाँव में कच्ची सड़क आ गयी है। इससे मरीजों और गर्भवती महिलाओं को अस्पताल तक ले जाने में सुविधा हो रही है। ग्रामवासी सुअरों और बन्दरों से स्वयं अपने खेतों की सुरक्षा करते हैं। वर्ष में पाँच–छः हजार की सब्जी प्रति परिवार बेचते हैं।

उकाल गाँव की हंसी दीदी ने भी अपने संगठन के बारे में बताया। महिलाओं ने संगठन द्वारा कोष जमा करके सामुहिक उपयोग की सामग्री खरीदी है। बर्तन, गैस चूल्हे, फिल्टर, दरी, तिरपाल आदि सामग्री ली है। सामाजिक कार्यों में सभी ग्रामवासी इस सामग्री का उपयोग करते हैं। केन्द्र अच्छा चल रहा था पर शिक्षिका न मिलने के कारण बन्द हो गया। भविष्य में कुछ आय–वृद्धि के कार्य करने की जरूरत है। जैसे सिलाई, बिनाई आदि काम महिलाएं कर सकती हैं।

थली गाँव की बसन्ती दीदी ने कहा कि आजकल महिलाएं पुरूषों से आगे बढ़ गयी हैं। बाजार से लेकर घर तक के सभी कार्य महिलाएं ही कर रही हैं। अभी हमें और आगे बढ़ना है। संगठन के साथ चलते हुए ही हम आगे बढ़ सकते हैं। संगठन नहीं होता तो गाँवों में इतनी जागरूकता न होती। पहले से तो लड़कियों को स्कूल भी नहीं भेजते थे। अब सभी लड़कियाँ पढ़ रही हैं, कॉलेज जाती हैं। रहन–सहन बदल गया है। यह बदलाव महिलाओं के हित में है।

निर्मला भैसौड़ा ने सभी को महिला मेले की बधाई दी। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान और संस्था की बहनों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि इन्हीं के प्रयासों से महिलाओं में हिम्मत आयी है। वे समाज में आगे आकर अपनी बातें कह रही हैं तथा मासिक गोष्ठियों में भाग लेती हैं। ग्राम सभा की गोष्ठियों में जाती हैं। आज महिलाएं बहुत जागरूक हो गयी हैं।

अन्त में सभी महिलाओं ने सामूहिक रूप से झोड़े गाये। पुरानी बाल–शिक्षिकाओं सुशीला जोशी और पुष्पा पन्त ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में सभी को मूँगफली, मिश्री व चाय दी और महिला मेले का समापन किया गया। इस कार्यक्रम का सम्पूर्ण कार्य एवं व्यवस्था मार्गदर्शिकाओं व शिक्षिकाओं ने मिलकर की।

महिला संगठन पाटा

राजेश्वरी देवी

जब 2012 में महिला संगठन बना तो हमें इस विषय पर कोई ज्यादा जानकारी न थी। उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान ने हमें चार–चार महिलाएं करके उत्तराखण्ड महिला परिषद् की गोष्ठियों में भाग लेने के लिए अल्मोड़ा बुलाया। वहाँ पर हमने अलग–अलग जिलों से आयी हुई ग्रामीण महिलाओं के साथ चर्चा की। आपस में विचारों का आदान–प्रदान हुआ। उत्तराखण्ड अलग–अलग जिलों से आई हुई महिलाओं के काम के बारे में जो नंदा पत्रिका छपी थी उसे भी हमने पढ़ा। इन महिलाओं को देखकर हमारे मन में हिम्मत जागी कि हम भी अब अपने गाँव में कुछ काम करेंगे।

इस वर्ष हमने अपने गाँव में नब्बे पानी के टैंक बनाये क्योंकि हमारे गाँव में पानी की बहुत कमी थी। सबसे पहले हमने जमीन में गहरा गढ्ढा खोदा। हमें अठारह बाई अठारह की प्लास्टिक शीट उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान अल्मोड़ा से मिली। हमने गढ्ढा खोदकर उसे लीपकर प्लेन बनाया। जब मिट्टी सूख गयी तो उसमें शीट बिछा दी। शीट को चारों कोनों में मिट्टी से दबाकर एक ओर से गहरी नाली सी बना दी। जिससे बरसात का गन्दा पानी टैंक में न जाये। उसके बाद टैंक के ऊपर एक जाली डालकर उसके चारों कोनों को टैंक के चारों कोनों में बाँध दिया।

इस समय हमारे गाँव में नब्बे टैंक पानी से भरे हैं। इस पानी से हम अपनी क्यारी–बाड़ी की सिंचाई करते हैं। इस वर्ष लगभग आठ महीने बारिश नहीं हुई लेकिन हमारा गाँव हरा–भरा बना रहा। टैंक बनाने से अब गाँव में पानी की कोई कमी नहीं है। पानी बरबाद भी

नहीं होता। टैंक के खाली हो जाने पर हम उसे दोबारा भर लेते हैं। जिसके पास अपनी पाइप लाइन नहीं हैं, उसे अन्य परिवार टैंक भरने के लिए पाइप लाइन से पानी दे देते है।

उत्तराखण्ड महिला परिषद् ने हमें भ्रमण के लिए गढ़वाल भेजा। इसका खाने, रहने और गाड़ी का सभी खर्च महिला परिषद् द्वारा दिया गया। इस भ्रमण में बच्ची दा और महेश भाई हमारे साथ थे। चार महिलाएं, दो किशोरियाँ तथा चार पुरूष एवं एक गाड़ी के ड्राइवर, कुल ग्यारह लोग सतबूँगा (पाटा) से भवाली के लिए चले। वहाँ से रानीखेत, चौबटिया, द्वाराहाट, भराड़ीसैंण, गैरसैंण, कर्णप्रयाग, रूद्रप्रयाग होते हुए शाम को ऊखीमठ पहुँचे। रात्रि विश्राम ऊखीमठ में रहा। 28 मार्च 2018 को सुबह अपने गाँव से हमने यात्रा शुरू की, उसी दिन शाम को ऊखीमठ पहुँच गये।

दूसरे दिन हम सिलाई तथा बुनाई केन्द्रों को देखने गये। वहाँ पर जलपान के साथ हम लोगों का स्वागत किया गया। केन्द्र में महिलाओं से बातचीत की। हमने उनसे पूछा कि एक दिन में कितने स्वेटर बना लेती हैं। इसी तरह सिलाई के लिए पूछा कि वे कौन से कपड़े तैयार कर लेती हैं। उन्होंने बताया कि सलवार, सूट, ब्लाउज, पेटीकोट इत्यादि सिल लेती हैं। केन्द्र में महिलाएं और लडकियाँ थीं। उनसे बातचीत करना हमें बहुत अच्छा लगा। हमने उन से कहा कि गल्ला गाँव में भी सिलाई बुनाई का सेन्टर खोल रहे हैं। वे भी हमारे यहाँ आयें। हमारा इलाका भी देख लेंगे। महिलाओं ने कहा कि वे जरूर हमारे क्षेत्र में आयेंगी। वहाँ पर उनका काम, उनकी बोली और स्वागत करने का तरीका बहुत अच्छा था।

उसके बाद हम डुंगर गाँव में गये। ब्योलदा तोक में महिलाओं ने पहली बार खेतों में आलू लगाये थे। किमाणा गाँव में बीन और गोभी लगायी थी। ग्रामवासियों का कहना था कि उन्होंने पहली बार संस्था के मार्गदर्शन में आलू और गोभी लगाये हैं। वहाँ पर हमने संगठन की महिलाओं से बातचीत की। हमने उनसे पूछा कि उन्हें संगठन बनाये हुए कितना समय हुआ। उन्होंने बताया कि दो साल से महिलाएं एकजुट हुई हैं। हमने मासिक बचत जमा करने के बारे में बातचीत की। वे पैसा जमा नहीं करतीं। हमने उन्हें बताया कि वे दस रुपया प्रति सदस्य मासिक बचत जमा करें। इससे महिलाओं की एक अपनी पूँजी जमा होती है। इस पूँजी का वे कभी भी उपयोग कर सकते हैं।

गाँव में शिक्षण केन्द्र भी था। एक शिक्षिका केन्द्र को चला रही थी। वहाँ पर बच्चों को खेल–खेल में शिक्षा दी जाती है। उस गाँव में केवल सत्रह–अठारह परिवार हैं। छोटा सा गाँव

है लेकिन महिलाओं में बहुत हिम्मत है। अपनी खेती–बाड़ी का काम मन लगा कर करती हैं। हमने उन्हें सलाह दी कि वे आड़ू के पेड़ भी लगा सकती हैं। वे हमारे इलाके में आयें और आड़ू के पेड़ ले जायें। इससे उनकी आय बढ़ेगी। इस प्रकार से विचारों का आदान–प्रदान करना बड़ा सुखद था।

इसके बाद हम वापस ऊखीमठ आये। दिन के भोजन के बाद हम मधुगंगा के निकट शिव सिंह नेगी जी के घर गये। वहाँ पर जलपान के साथ हम सभी का स्वागत हुआ। वहाँ पहुँचने तक मौसम भी ठंडा हो गया था। बारिश भी होने लगी। इस कारण हम वहाँ पर थोड़ी देर रूके। फिर वापस ऊखीमठ आ गये। ऊखीमठ से हिमालय बिल्कुल नजदीक दिखायी दे रहा था। हिमालय की चोटियाँ बहुत सुन्दर लग रही थीं। वहाँ पर रहना एक नया अनुभव था।

ऊखीमठ में कैलाश पुष्पवान जी के द्वारा संचालित जैम, जूस के केन्द्र में गये। उन्होंने हमारा स्वागत किया। वहाँ पर विभिन्न प्रकार का जूस बना कर रखा गया था। हम ने कुछ जूस खरीदा और घर के लिए रखा। इस जूस का स्वाद बहुत अच्छा लगा, इस में फलों के ताजेपन की महक थी और शुद्धता के कारण रंग भी अच्छा आया था।

तीसरे दिन सुबह गाड़ी में बैठकर चोपता गये। यह एक बहुत सुन्दर पर्यटन स्थल है। जंगल में लाल और गुलाबी रंग के बुरांश के फूल खिले थे। घूमने के लिए बाहर से पर्यटक भी आये हुए थे। सड़क में कई गाड़ियाँ रूकी थीं। लोग फोटो ले रहे थे। हमने भी वहाँ पर फोटो खिंचायी। वहाँ बर्फ से ढकी हुई हिमालय की चोटियाँ बहुत सुहानी लग रही थीं। मौसम भी ठंडा था।

चोपता से आगे चलकर हम मण्डल पहुँचे। यहाँ की महिलाओं ने जंगल बचाने के लिए चिपको आन्दोलन में भाग लिया था। यदि कोई पेड़ काटता तो उसे रोकने के लिए वे पेड़ से चिपक कर खड़ी हो जाती थीं। मण्डल से आगे चलकर ग्वाड़ गाँव में पहुँचे। वहाँ पर संगठन की अध्यक्षा श्रीमती सुमन कुंवर के घर में जलपान के साथ हमारा स्वागत हुआ। उन्होंने संगठन के माध्यम से ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाया है। गाँव में पॉलीहाउस लगाये गये हैं। खेतों में गोभी, मटर, बीन आदि बोयी है। गाँव में पानी की कमी न थी। इस वजह से सब्जी खूब होती है। मौसम भी काफी अच्छा था। हमने ग्रामवासियों से बात की। उनसे भी यही कहा कि यहाँ पर आड़ू के पेड़ हो सकते हैं। वहाँ पर मौसम भी हमारे ही इलाके की तरह था। उसके बाद हम पास में ही बने एक जूस केन्द्र में गये। वहाँ पर हमारा जलपान के साथ स्वागत हुआ। उसके

बाद शाम को गोपेश्वर में ठहरे। गोपेश्वर में महानंद बिष्ट जी नवज्योति महिला कल्याण संस्था द्वारा आसपास के सभी गाँवों में संगठनों के माध्यम से काम करते हैं।

चौथे दिन सुबह हम गोपेश्वर से चल कर अलकनंदा नदी पार करते हुए कर्णप्रयाग के समीप स्थित गाँव चौण्डली में पहुँचे। वहाँ पर शेप संस्था के अध्यक्ष शिव प्रसाद किमोठी जी से मिले। चौण्डली गाँव में शेप संस्था की कार्यकर्त्ता लक्ष्मी नेगी के घर गये। वहाँ पर शेप संस्था के माध्यम से ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाया जाता है। ग्रामवासी बड़े कर्मठ हैं। बंदर–सुअरों द्वारा फसलों के नुकसान की समस्या के बावजूद खेतों में गेहूँ, प्याज, धनिया, मटर आदि फसलें बोयी थीं। वे दूध का उत्पादन करते हैं, रोज कर्णप्रयाग की बाजार में दूध भेजते हैं।

उसके बाद हम कर्णप्रयाग गये। इस भ्रमण कार्यक्रम में हम महिलाओं ने हिमालय की ऊँची–ऊँची चोटियाँ देखीं। देवभूमि के लोगों की बोली–भाषा तथा गढ़वाल क्षेत्र की विभिन्न प्रकार की खेती–बाड़ी का भरपूर जायजा लिया। कर्णप्रयाग से भराड़ीसैंण, गैरसैंण, चौखुटिया, द्वाराहाट, रानीखेत होते हुए भवाली से अपने घर सतबूँगा (पाटा) शाम को आठ बजकर पैंतालिस मिनट पर पहुँचे। इसी के साथ हमारे भ्रमण का समापन हुआ। चार दिन तक गीत–भजन गाते हुए चलते रहे। समय का कोई पता भी नहीं चला। इस भ्रमण से बहुत शिक्षा ली। खासकर, गढ़वाल क्षेत्र की महिलाओं की एकता और संगठन की मजबूती ने हमें बहुत प्रभावित किया। साथ ही, वहाँ पर पुरूष और युवक भी महिला संगठनों का खूब सहयोग करते हैं। इस वजह से ये संगठन बहुत आगे बढ़े हैं।

पानी : समस्या और समाधान

राजेन्द्र सिंह बिष्ट

पानी प्रकृति–प्रदत्त एक ऐसा उपहार है जिससे धरती में जीवन संभव है। वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी में कुल जमा पानी का सिर्फ ढ़ाई प्रतिशत ही प्रकृति में मौजूद जीवों के लिए उपयोगी है। इसमें से भी ज्यादातर हिमनदों/ग्लेशियरों के रूप में है। कहने का आशय यह है कि धरती में उपलब्ध पानी का मात्र 0.8 प्रतिशत ही हमारे उपयोग में आता है। इस आंकड़े से हमारी धरती में मौजूद पानी की स्थिति को समझने में मदद मिलती है।

यदि उत्तराखण्ड के संदर्भ में पानी की स्थिति को समझने का प्रयास करें तो पायेंगे कि गाँवों में दिनोदिन पानी की समस्या बढ़ रही है। यूँ तो देश की अधिकतम बड़ी नदियाँ उत्तराखण्ड से ही निकलती हैं पर गाँवों में पानी का अभाव बना रहता है।

गाँवों में पीने के पानी की समस्या गंभीर रूप ले चुकी है। इस समस्या को समझने के लिए हमें गाँवों में पानी की उपलब्ध मात्रा और जल–प्रबन्धन के तरीकों को समझना होगा। यदि जल–वितरण की पाइप लाइन वाली नवीनतम सरकारी व्यवस्था को छोड़ दें तो गाँवों में जल–प्रबन्धन की समृद्ध पुरानी व्यवस्था रही है। पूर्व में पानी की स्थिति को ध्यान में रखकर ही गाँव बसे थे। उस समय शायद ही कोई ऐसा गाँव होगा जिसके पास अपना पानी न हो। आज की तरह अनियोजित निर्माण भी नहीं था।

हम यदि गाँवों में पानी की उपलब्ध संरचनाओं को देखें तो धारे, नौले, नदी व तालाबों के अनेक रूप दिखाई देते हैं। इन जल–संरचनाओं को ग्राम समाज में पवित्र व पूज्यनीय माना जाता रहा है। इनकी शुद्धता व पवित्रता बनी रहे, ऐसे प्रयास ग्राम–समाज द्वारा किये जाते थे। कमोबेश गाँवों में यह परंपरा आज भी जीवित है। इन जल संरचनाओं को समृद्ध रखने के लिये जल धारण क्षेत्र में चाल–खाल का निर्माण भी ग्रामवासी स्वयं ही करते थे।

धारे, नौले किसी परियोजना के तहत नहीं बल्कि लोगों के सामुहिक प्रयास एवं स्वयं की समझ और दूरदर्शी सोच के तहत बनाये गये थे। इन जल–संरचनाओं का रखरखाव ग्रामवासी स्वयं ही करते रहे हैं। यही नहीं, सिंचाई के लिये कई किलोमीटर लंबी गूलों का निर्माण भी लोगों ने सामूहिक प्रयासों से किया। आज भी कई स्थानों पर सिंचाई की पारंपरिक व्यवस्था मौजूद है।

पाइप लाइन द्वारा पानी उपलब्ध कराने से लोगों को सुविधा अवश्य हुई। इस प्रयास को महिलाओं के कार्यबोझ को कम करने के रूप में भी देखा गया है। कई मायनों में यह सही भी था। इससे समय की बचत होने लगी, पानी भी सरलता से उपलब्ध होने लगा। लेकिन धीरे–धीरे योजनाएं जर्जर होने लगी। इन योजनाओं में उपलब्ध पानी को वितरित करने पर जोर दिया गया। पानी बचाने, बढ़ाने लिए के कोई विशेष प्रयास नहीं हुए।

गाँवों में पानी उपलब्ध कराने की नवीनतम व्यवस्थाओं ने लोगों को उन परम्परागत जल–संरचनाओं से भी विमुख कर दिया जो सदियों से लोगों को पानी उपलब्ध करा रही थीं। साथ ही नई पीढ़ी भी जल संरक्षण एवं संवर्धन के इतिहास और स्थानीय तरीकों की उपयोगिता की समझ से वंचित ही रही। इसका परिणाम यह हुआ कि वे जल–संरचनाएं जो सदियों से पानी उपलब्ध करा रही थीं, संरक्षण के अभाव में खत्म हो गई अथवा खत्म होने की कगार में हैं। जो जल–संरचनाएं गाँवों में मौजूद हैं, उनके रखरखाव व संवर्धन को लेकर लगाव और जन–प्रयास भी नहीं दिखाई देता है।

यह विचित्र ही है कि आज आधुनिक तकनीकें है, संसाधन हैं, औजार हैं, लेकिन कोई भी नया नौला या धारा उस रूप में नहीं बना जो सदियों पूर्व बनाये गये थे। आज गाँवों में पानी की समस्या जिस तरह से बढ़ रही है उसके लिए लोग मिलकर उन जल स्रोतों को संरक्षित करें जो गाँवों में मौजूद हैं। यदि समय रहते ये प्रयास नहीं किये गये तो वह दिन दूर नहीं जब अनेक गाँव जलविहीन हो जायेंगे। जिन गाँवों में पानी के स्रोत नहीं है वहाँ वर्षा के जल को संरक्षित करने के प्रयास हो सकते हैं। ग्राम समुदाय मिलकर यह प्रयास कर सकता है। जिन गाँवों में महिला संगठन, नव युवक मंगल दल या कोई अन्य संगठन मौजूद हैं, वे ग्राम–समुदाय को जोड़ते हुए ऐसे प्रयास कर सकते हैं।

यदि भविष्य में अपने तथा आने वाली पीढ़ी के लिए पानी को बचाना है तो स्वयं ही प्रयास करने होगें। जल–संरक्षण, जल–प्रबन्धन के इतिहास को समझना होगा। मात्र उपभोग की सोच से उपर उठकर पानी के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए सामुहिक पहल करनी होगी। साथ ही नई पीढ़ी को जल–संरक्षण की समृद्ध परम्परा से परिचित करना होगा। उन्हें जल–संरक्षण के प्रयासों में भागीदार बनाना होगा।

गाँवों में पानी को बचाने के लिए दो स्तरों पर कार्य करना जरूरी है। पहले तो उपलब्ध पानी का सही प्रबन्धन, पानी के दुरूपयोग को रोकना और गाँवों में मौजूद जल संरचनाओं का

संरक्षण आवश्यक है। दूसरा पानी बचाने, बढ़ाने के अन्य तरीके अपनाने होंगे। जैसे–जलधारण क्षेत्रों में चौड़ी पत्ती के पेड़ों का रोपण, चाल–खाल निर्माण, पुराने तालाबों को संरक्षित करना इत्यादि। इसके साथ ही वर्षा के जल को संग्रहण करने की तकनीक अपनानी होगी।

आज गाँवों में जल परिदृश्य को देखें तो स्थिति गंभीर है। जो लोग पानी बचाने की दिशा में काम कर रहे हैं, उन्होंने भी अपने अनुभव से यही पाया कि जल संरक्षण के परम्परागत तरीके बहुत कारगर थे। प्रकृति–प्रदत्त वर्षा का जल एक उपहार के रूप में मिलता है। इस जल को जमा करने के उपाय किये जा सकते हैं। साथ ही चाल–खाल बना कर भूजल स्तर को बढ़ाने के प्रयास होने जरूरी हैं। वर्षा के जल को संग्रहित करने का एक उपाय यह हो सकता है कि गाँवों में प्रत्येक घर की छत से गिरने वाले पानी को जमा करने के उपाय किये जायें। इससे लाखों लीटर पानी जमा करके आवश्यकतानुसार उपयोग में लाया जा सकता है।

पानी से जुड़ा हुआ दूसरा पहलू है उसकी गुणवत्ता और शुद्धता। जिस पानी को हम पी रहे हैं, संभव है कि वर्षो पूर्व वह शुद्ध था लेकिन बदलते मौसम–चक्र और जनसंख्या वृद्धि से उसकी गुणवत्ता तथा शुद्धता में बदलाव आया हो। इस पक्ष को लेकर जागरूक रहने की जरूरत है। ग्राम संगठनों, जागरूक नागरिकों के सहयोग से पानी की जाँच कराकर ग्राम समुदाय को उसके बारे में बताया जा सकता है। ताकि ग्राम समुदाय भी जान सके कि वे जिस पानी का उपयोग कर रहे हैं उसकी शुद्धता का स्तर कैसा है।

आज अनेक गाँवों में हैण्डपम्प लगे हैं। ग्रामवासी बिना पानी की जाँच किये उसका उपयोग कर रहे हैं। यदि जाँच हुई भी होगी तो उसकी जानकारी उपयोग करने वालों को नहीं है। नागरिकों को यह जानने का हक है कि वे जो पानी उपयोग हो रहे हैं उससे शरीर में कोई बुरा प्रभाव तो नहीं होगा। पेयजल की जाँच होने से उस में घुले हुए खनिज, उनकी मात्रा और किटाणुओं की उपस्थिति से पता मालुम होगा कि यह अशुद्ध है अथवा पीने योग्य। इस दिशा में सोचने–समझने और आगे काम करने की जरूरत है।

पानी के महत्व को समझें, इसे बचायें। पानी है तभी धरती पर जीवन संभव है।

गोगिना की बेटी

पुष्पा रौतेल
।

सूरज की किरणों सी चमक रही।
फूलों की खुशबू सी महक रही।।

धानों की बाली सी लटक रही।
चिड़ियों की बोली सी चहक रही।।

बादल के जैसी गरज रही।
बिजली के जैसी चमक रही।।

बाँधों मत, मुझे बढ़ने दो।
आसमान को छूने दे।।

नई दुनिया देखने दो।
अपनी बातें कहने दो।।

कठिनाइयों से लड़ने दो।
मंजिलों को ढूढ़ने दो।।

अपने विचार कहने दो।
अपने आप खड़ी होने दो।।

मैं हिमालय के बीच की।
मैं रहने वाली गोगिना की।।

महिला संगठन गोड़ गाँव

माया जोशी

गोड़ गाँव पारकोट ग्राम सभा का एक छोटा सा तोक है। इस तोक में अठ्ाइस परिवार रहते हैं। गोड़ गाँव में महिला संगठन 2009 में बना। इस गाँव में पलायन कम है, सभी परिवार गाँव में ही रहते हैं। गाँव में उपराऊ जमीन है। इस गाँव में दो साल पहले सड़क चली गयी। जब से गाँव में सड़क पहुँची महिलाओं को भी सुविधा हो गयी। अब महिलाएं खेतों से धान, पुवाल, गेहूँ इत्यादि गाड़ी में भर कर घर ले जाती हैं। जो काम दस दिन में होता था, वह एक दिन में हो जाता है। सभी महिलाएं एकजुट होकर काम करती हैं। खेतों में काम करना हो या जंगल में सभी साथ–साथ काम करती हैं। जब संगठन बनाया तो कुल बारह महिलाएं जुड़ी थीं। धीरे–धीरे सभी लोग जुड़ गये। संगठन भी काफी मजबूत बन गया है।

संगठन की गोष्ठी हर माह की दस तारीख को होती है। सभी महिलाएं बीस–बीस रुपया कोष में जमा करती हैं। आज संगठन के पास स्वयं के जोड़े हुए बर्तन और चाँदनी है। साथ ही, कोष में पचास हजार रुपया जमा है। इनके पास सामुदायिक भवन नहीं है। महिलाओं ने कई बार विधायक को लिख कर दिया है। ग्राम–सभा में पंचायत–भवन बना है। यह भवन गाँव से तीन किलोमीटर दूर है। वहाँ गोष्ठी में भाग लेने के लिए जाना महिलाओं के लिए मुश्किल है। इस वजह से वे चाहती हैं कि गाँव में ही एक भवन का निर्माण हो।

संगठन की गोष्ठी में महिलाएं जंगल और खेती, रास्तों की सफाई, धारे की सफाई, बन्दरों को बारी लगाकर भगाना आदि विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करती हैं। इस गाँव में सब्जियों का उत्पादन अच्छा होता है। महिलाएं भी काफी मेहनती हैं। यहाँ ग्राम शिक्षण केन्द्र खुला है। यह केन्द्र अच्छा चलता है। केन्द्र में बत्तीस बच्चे हैं। गाँव की ही एक बहू केन्द्र में शिक्षिका के तौर पर काम करती है। महिलाएं भी बारी–बारी से केन्द्र को देखने जाती हैं। महिलाओं ने गाय चराने की भी बारी लगायी है। गाँव की सभी महिलाएं ग्वाला नहीं जातीं, केवल दो महिलाएं जाती हैं। इस तरह हर महिला की बारी पन्द्रह दिन के बाद आती है। इससे महिलाओं को अन्य काम करने का समय मिल जाता है। गाँव की महिलाएं कच्ची लकड़ी नहीं काटती। इस वर्ष संगठन ने अपने वन–पंचायत में बाँज और कांफल के पेड़ लगाये हैं। साथ ही, महिलाओं ने गाँव की बंजर–भूमि में चाय–पत्ती के पेड़ लगाने का निर्णय लिया है।

संगठन दन्या

अनिला पंत

दन्या गाँव में हर माह बाइस तारीख को महिला संगठन की गोष्ठी होती है। महिलाएं कोष का पैसा जमा करती हैं। चेतना–गीत गाती हैं तथा गाँव में हो रही समस्याओं पर चर्चा करती हैं। महिलाओं के साथ ग्रामसभा के कार्यो, जंगली जानवरों द्वारा फसलों को हो रहे नुकसान से सम्बन्धित चर्चाएं होती हैं। जंगली जानवरों को भगाने के लिये संगठन की महिलाएं बारी–बारी से खेतों में जाती हैं। ग्राम–सभाओं तथा संस्था द्वारा आयोजित की जाने वाली गोष्ठियों में भी भाग लेती है। किशोरियाँ भी गोष्ठी में आती है। महिलाओं और किशोरियों के बीच आपसी विचार–विमर्श होता है। उनके साथ भी चर्चा करते हैं।

गौली गाँव में हर माह की दस तारीख को गोष्ठी होती है। जरूरत पड़ने पर एक ही माह में दो–तीन बार भी गोष्ठी करते हैं। इन बैठकों में गाँव की समस्याओं के बारे में चर्चा होती है। महिलाएं कोष से ऋण लेकर अपने कार्य करती हैं। ब्याज सहित पैसा जमा करती हैं। ग्रामसभा की बैठकों में जाकर अपनी और गाँव की समस्याएं बताती हैं। ग्रामसभा द्वारा गाँव में किये गये कार्यों में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी रहती है। महिलाएं शराब की समस्या को लेकर दन्या थाने में ज्ञापन देने भी गई। महिलाओं के साथ–साथ किशोरियाँ भी गोष्ठी में आती हैं। उनके साथ भी चर्चा होती है। कुछ किशोरियाँ ग्राम शिक्षण केन्द्र से कहानी की किताबें और अखबार पढ़ने के लिए ले जाती हैं। महिलाएं संस्था के कार्यक्रमों में खुलकर भाग लेती हैं। इस गाँव में कम्प्यूटर केन्द्र भी चल रहा है।

डसीली गाँव में महिला संगठन की गोष्ठी अठारह तारीख को होती है। महिलाओं के साथ घर गाँव और केन्द्र से संबंधित समस्याओं पर चर्चा की जाती है। यहाँ पर महिलाओं ने कोष जमा करके सामुहिक उपयोग के लिए बड़े बर्तन खरीदे हैं। ग्राम–सभा के माध्यम से जो भी कार्य गाँव में होते है, उस में सभी महिलाएं भाग लेती हैं। ग्राम–प्रधान भी महिलाओं को पूरी जानकारी देते हैं। शौचालय बनाने के लिए हर परिवार को ब्लॉक द्वारा आर्थिक सहयोग मिला है। महिलाएं रास्तों और मन्दिर की सफाई करती हैं। इससे गाँव साफ–सुथरा रहता है। सभी महिलाएं ग्राम–सभा की गोष्ठी में जाकर अपनी समस्याएं बताती हैं। महिलाओं में अब काफी जागरूकता आ गयी है। ग्राम शिक्षण केन्द्र में गाँव की सभी किशोरियाँ, महिलाएं और बच्चे जाते हैं। केन्द्र में कहानी की किताबें और अखबार पढ़ते हैं।

रूवाल गाँव में हर माह की तेरह तारीख को गोष्ठी करते हैं। महिलाएं गोष्ठी में जल, जंगल, जमीन और जंगली जानवरों की समस्याओं पर चर्चा करती हैं। प्रौढ़ और वृद्ध महिलाएं उदाहरण देकर बताती हैं कि वे जमीन से खूब अनाज, सब्जी और दालें उगाते थे। अब जंगली जानवरों की समस्या हो गई है। नई बहुओं में जमीन के प्रति लगाव कम हो रहा है। वे सिलाई, कम्प्यूटर आदि सीखना चाहती हैं। अब समय बदल रहा है। महिलाओं ने कोष के माध्यम से गाँव की जरूरत की सामग्री खरीदी है जो सभी के काम आती हैं। गोष्ठी में किशोरियाँ भी अपने विचार रखती हैं तथा ग्राम शिक्षण केन्द्र से पढ़ने हेतु कहानी की किताबें ले जाती हैं।

टकोली गाँव में दिसम्बर 2017 से ग्राम शिक्षण केन्द्र खुला है। तब से महिलाओं के साथ हर माह गोष्ठी करते हैं। गोष्ठी में आने के बाद महिलाओं ने रास्तों की सफाई की। झाड़ियाँ काटीं। नौले की सफाई की। ग्राम प्रधान ने बच्चों के बैठने के लिए पंचायत घर में व्यवस्था की है। गाँव में केन्द्र खुलने से काफी जागरूकता आई है। महिलाओं की गोष्ठी में किशोरियाँ भी भाग लेती हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र से पढ़ने के लिये कहानी की किताबें और अखबार ले जाती हैं। संस्था की बहनों ने महिलाओं को बताया कि वे केन्द्र (ग्राम शिक्षण केन्द्र) में जाकर बच्चों का कार्यक्रम देखें। महिलाएं संस्था के कार्यक्रमों में भी भाग ले रही हैं। जैसे बाल–मेला, महिला–मेला व संस्था की अन्य गोष्ठियों में भागीदारी करती हैं। केन्द्र खुलने से ही गाँव में संगठन बना है।

धारागाड़ गाँव में हर माह की इक्कीस तारीख को गोष्ठी होती है। गोष्ठी में महिलाएं कोष का पैसा जमा करती हैं। कोष के माध्यम से गाँव की जरूरतों का सामान लेती हैं। यह सामग्री सभी के काम आती है। महिलाएं ग्राम–सभा की गोष्ठी में जाती हैं। ग्राम–प्रधान से गाँव में काम कराने की बातें कहती हैं। खुद भी काम पर जाती हैं। ब्लॉक में जाकर बी. डी. ओ. से भी अपनी समस्याएं कहती हैं। संस्था के सहयोग से महिलाओं में काफी जागरूकता आयी है। महिलाएं निरंतर संस्था एवं अल्मोड़ा की गोष्ठियों में भाग लेती हैं। इन गोष्ठियों में जो भी नई जानकारी मिलती है, उसे गाँव में सभी को बताती हैं। किशोरियाँ भी गोष्ठी में आकर अपनी–अपनी समस्याएं कहती हैं। केन्द्र से अखबार और कहानी की किताबें पढ़ने के लिए ले जाती हैं। जंगली सुअरों व बन्दरों को भी संगठन के माध्यम से भगाया जाता है, इससे सभी की खेती बचती है। महिला संगठन ने जंगल का संरक्षण भी किया है।

कुलौरी गाँव में हर माह की पच्चीस तारीख को संगठन की गोष्ठी होती है। महिलाएं गोष्ठी में चेतना–गीत गाती हैं। गाँव में हो रही समस्याओं पर चर्चा की जाती है। केन्द्र की

समस्या पर भी चर्चा होती है। केन्द्र चलाने के लिए एक महिला ने अपना कमरा दिया है। महिलाएं माह में एक बार नौले और रास्तों की सफाई करती हैं। जंगल से कच्ची लकड़ी काटने पर पाबन्दी लगायी है। सभी ग्रामवासी सूखी लकड़ी ले कर आते हैं। गाँव की किशोरियाँ भी केन्द्र में जाकर अखबार व कहानियों की किताबें पढ़ती हैं। केन्द्र में कैरम, बैडमिंटन आदि खेलती है। केन्द्र के माध्यम से गाँव में जागरूकता आई है। महिलाएं निःसंकोच अपने विचारों को गोष्ठियों में रखती हैं। संगठन की सदस्याएं नियमित रूप से अल्मोड़ा जा कर गोष्ठियों में भाग लेती हैं।

पड़ाई गाँव में हर माह की नौ तारीख को गोष्ठी करते हैं। गोष्ठी में भाग लेने सभी महिलाएं और किशोरियाँ आती हैं। सभी अपनी–अपनी समस्याएं बताते हैं। समस्याओं और उन के समाधान पर विस्तार से चर्चा की जाती है। गाँव में संगठन के माध्यम से नौले–धारों और रास्तों की सफाई होती हैं। महिलाओं ने जंगल बचाया है तथा खेतों की रखवाली भी बारी–बारी से करती हैं। संगठन के माध्यम से सुअर और बन्दर भगाती हैं जिससे सभी की खेती बचती है। सभी परिवारों ने गाय, भैंस, बकरी आदि जानवर पाले हुए है। ग्रामवासी दूध बेचते हैं, जिससे हाथ में कुछ पैसा आता है। महिलाएं मडुवा, सब्जी, दालें इत्यादि भी बेचती हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र में सभी का जुड़ाव है। गाँव के बुजुर्ग भी केन्द्र में अखबार पढ़ने आते हैं।

बसाण गाँव में हर माह की सताइस तारीख को महिला संगठन की गोष्ठी होती है। गोष्ठी में सभी महिलाएं एवं किशोरियाँ आती हैं। सभी मिलकर चेतना गीत गाते हैं तथा गाँव की समस्याओं पर विचार करते हैं। महिलाएं अपनी समस्याएं गाँव के ग्राम–प्रधान से कहती हैं। इस गाँव में पानी की बड़ी समस्या है। सभी महिलाओं ने मिलकर ग्राम–प्रधान से इस समस्या के बारे में कहा तथा खुद काम करके समाधान भी किया। ग्रामवासी चाहते हैं कि गाँव में सड़क आ जाये। गाँव में एक प्राथमिक पाठशाला है। सभी बच्चे पढ़ने के लिए जाते है। ग्राम शिक्षण केन्द्र भी चलता है। महिलाओं ने जंगल का संरक्षण किया है। बन्दरों और सुअरों को बारी–बारी से भगाती हैं, इसलिए वहाँ खेती–बाड़ी अच्छी हुई है।

मुनौली गाँव में हर माह की बाइस तारीख को महिला संगठन की गोष्ठी होती है। संगठन की सदस्याएं कोष में कुछ धन जमा करती हैं। चेतना–गीत गाती हैं। महिलाएं अपनी–अपनी समस्याएं गोष्ठी में बताती हैं। समस्याओं पर चर्चा की जाती है। इस गाँव में महिलाओं ने जंगल का संरक्षण किया है। नौले–धारों की सफाई और रास्तों की सफाई की है। ग्रामवासियों ने शराब की दुकान को हटाने के लिये थाने में ज्ञापन दिया। इण्टर कॉलेज के

पास से दुकान हटाने के बारे में चर्चा की और दुकान हट गई। कुछ समय गाँव में कम्प्यूटर शिक्षण केन्द्र चला। गाँव की बहुएं भी कम्प्यूटर सीखना चाहती हैं। हर माह गोष्ठी में टीकाकरण, स्वास्थ्य, जंगली जानवरों की समस्याएं, जंगलों के संरक्षण आदि विषयों पर चर्चा होती है। महिलाएं कोष के माध्यम से अपने निजी कार्य भी पूरे करती हैं।

आटी गाँव में प्रति माह एक तारीख को महिला संगठन की गोष्ठी होती है। कभी–कभी समय न मिलने पर महिलाएं दूसरी तारीख को गोष्ठी कर लेती हैं। गोष्ठी में कोष जमा करते हैं। गाँव की समस्याओं पर सामुहिक तौर पर चर्चा की जाती है। इस गाँव की महिलाओं ने जंगल बचाया है। जंगल में आग लगने पर वे सभी मिलकर आग बुझाने जाती हैं। वर्तमान में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सौजन्य से जल–स्रोतों के सुधार का कार्य हुआ है। नौलों का सुधार किया गया है। यहाँ पर महिलाओं का रैस्टोरेन्ट भी बन रहा है। इस पहल से गाँव के लोग, विशेषकर महिलाएं, काम करने की सोच को आगे बढ़ा रहे हैं। पहाड़ी व्यंजनों की चर्चा भी काफी हो रही है। कैसे रैस्टोरेन्ट को चलायेंगे, इस मुद्दे पर महिलाएं सोच विचार कर रही हैं। यहाँ पर महिलाएं दूध का उत्पादन करती है। दूध और घी बेचकर घर का खर्च चलाती हैं। घर के खर्च का पूरा हिसाब रखती हैं।

हर माह की आठ तारीख को उकाल गाँव में महिलाओं की गोष्ठी होती है। गोष्ठी में ग्राम–सभा के कार्यों और जंगली जानवरों की समस्या के बारे में चर्चा की जाती है। जंगली जानवरों से खेतों की सुरक्षा के बारे में विचार–विमर्श होता है। नई बहुएं सिलाई, बुनाई, कम्प्यूटर इत्यादि कार्य सीखना चाहती हैं। महिलाओं ने अपने गाँव में सामुहिक उपयोग के लिए बर्तन, गैस चूल्हे, फिल्टर, दरी, तिरपाल आदि सामग्री खरीदी है। सभी महिलाएं एक–दूसरे के सुख–दुख में हाथ बॅटाती हैं। संस्था के कार्यक्रमों में भी भाग लेती हैं।

कोट्यूड़ा गाँव में प्रतिमाह सत्रह तारीख को महिला संगठन की गोष्ठी होती है। गोष्ठी में सभी महिलाएं मिल कर चेतना–गीत गाती हैं। महिलाओं ने कोष के माध्यम से गाँव में सामुहिक उपयोग के लिए बर्तन, दरी, चाँदनी आदि सामग्री खरीदी है। सभी ग्रामवासी शादी–ब्याह और अन्य सामाजिक कार्यों में इसका उपयोग करते हैं। अपने गाँव के सभी कार्य एक–दूसरे की मदद से करते हैं। संगठन की सदस्याएं अपनी बातें खुलकर कहती हैं। संगठन ने जंगल का संरक्षण किया है। कच्ची लकड़ियाँ काटना बन्द किया है। महिलाएं अपने उपयोग के लिए सब्जी और दूध का उत्पादन करती हैं।

किशोरियों के लिए कम्प्यूटर शिक्षण

गरिमा नयाल

मैं गाँव दुत्कानेधार में रहती हूँ। इस वर्ष मई के महीने में जनमैत्री संगठन गल्ला में गई तो देखा कि वहाँ पर कम्प्यूटर आये हुए हैं। इससे मुझे कम्प्यूटर सीखने का मौका मिला। मैं हर सुबह जल्दी उठकर कम्प्यूटर सीखने के लिए जाती हूँ। केन्द्र में जा कर मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं कम्प्यूटर सीखने रोज जाती हूँ। कभी किसी कारणवश नहीं जा पाती तो मुझे बहुत बुरा लगता है। मुझे कम्प्यूटर क्लास में जाना, वहाँ जाकर सीखना और हर रोज नए–नए कार्य करना पसंद है।

केन्द्र में जाने से कम्प्यूटर के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। पहले मुझे कम्प्यूटर खोलना भी नहीं आता था। अब मुझे केन्द्र में आते हुए एक महीना होने को है। इस एक महीने में मैंने बहुत कुछ सीख लिया है। कम्प्यूटर के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त की है। मैं और मेरे साथ की बहुत सी लड़कियाँ सुबह क्लास में आती हैं। सब साथ मिलकर सीखते हैं। गल्ला मेरे घर से बहुत दूर है। कम से कम पाँच किलोमीटर की दूरी तय करनी होती है। कभी गाड़ी मिल जाती है, कभी पैदल ही जाना पड़ता है।

केन्द्र में अलग–अलग करके सब की बारी आती है। बच्चे अधिक होने के कारण हमें सिर्फ आधे घंटे का समय मिल पाता है। इस आधे घंटे में हम बहुत कम सीख पाते हैं। कम्प्यूटर बहुत कम हैं, अगर ज्यादा होते तो हमें ज्यादा समय मिलता और हम ज्यादा सीख पाते।

आज तक हमारे गाँव में ऐसी सुविधा नहीं आयी थी। यह पहली बार हुआ कि हमारे गाँव के इतने नजदीक कम्प्यूटर आये हैं और हमें सीखने का मौका मिल पाया है। हमें इस सुविधा का पूरा लाभ मिल रहा है। हमें कम्प्यूटर क्लास में जाना बहुत अच्छा लगता है। एक और अच्छा पक्ष यह भी है कि उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान किशोरियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। किशोरियाँ खेती के अलावा अन्य कार्य सीखना चाहती हैं तथा संस्थान निरंतर हमें यह अवसर दे रहा है।

मैं और मेरे अन्य साथी जब अपनी बारी का इंतजार करते हैं तो खाली नहीं बैठते। हम किताबें पढ़ते हैं। किताबें भी उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा की तरफ से आयी हैं। इन किताबों से हमें अलग–अलग बातें सीखने को मिलती हैं। किताबें हमें घर में पढ़ने के लिए भी दी जाती हैं। इन किताबों में कुछ ऐसी नयी–नयी बातें लिखी हुई हैं जो हमने आज तक कभी नहीं पढ़ी थी।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, उत्तराखण्ड की जागरूक एवं क्रियाशील ग्रामीण महिलाओं का संगठन है जिसने ग्राम समुदाय में विकास की मुख्य–धारा के ढाँचे से अलग एक वैकल्पिक विकास की व्यवस्था और उसके क्रियान्वयन के तौर–तरीके को विकसित किया है। उत्तराखण्ड में ग्रामीण महिलाओं के सबसे बड़े संगठन के रूप में प्रतिष्ठित महिला परिषद् का काम राज्य भर में फैले हुए ग्राम–स्तरीय संगठनों व स्वैच्छिक संस्थाओं ने संभाला है, जो ग्रामीण इलाकों में परिवर्तन लाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

यद्यपि उत्तराखण्ड में महिला संगठनों के गठन एवं कार्यों की शुरूआत 1988 से हो गयी थी परंतु चार सौ पैंसठ महिला संगठनों की सोलह हजार सदस्याओं तथा बाइस स्वैच्छिक संस्थाओं की सम्मिलित आवाज से विकास संबंधी समस्याओं को संस्थात्मक, व्यवहारिक एवं वैचारिक मध्यस्थता देने की जरूरत को समझते हुए, 7 फरवरी, 2000 को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का गठन किया गया। परिषद् की सदस्याओं में जाति, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, उम्र के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। बड़ी संख्या में पचास वर्ष से अधिक उम्र की महिलाएं कभी भी विद्यालय नहीं गयी हैं, परंतु बीस से पचास वर्ष की अधिकतर महिलाएं साक्षर हैं और शिक्षा का स्तर प्राथमिक है। गाँवों में जहाँ पूर्व प्राथमिक केन्द्र काम कर रहे हैं, वहाँ सभी लड़कियाँ माध्यमिक स्तर तक पढ़ी हैं तथा हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट तक पढ़ी हुई लड़कियाँ भी काफी संख्या में हैं। कुछ लड़कियों ने शिक्षिका के रूप में कार्य करते हुए बी0 ए0 एवं एम0 ए0 तक शिक्षा पूरी की है। यह जरूरी नहीं है कि गाँव की समृद्ध तथा शिक्षित महिला ही परिषद् की सबसे क्रियाशील सदस्य हो, बल्कि इस जनधारणा के विपरीत कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर या शिक्षित महिला ही अच्छा नेतृत्व कर सकती है, गाँव की प्रौढ़ महिलाएं, जो यहाँ की स्थाई निवासी हैं, खेती करती हैं, परिषद् की अधिक क्रियाशील सदस्याएं हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, ग्रामीण महिलाओं के ऊपर विकास कार्यक्रमों को थोपती नहीं बल्कि उन्हें बालवाड़ी शिक्षिकाओं, पुरूषों, अध्यापकों, युवाओं, स्थानीय अधिकारियों तथा अन्य संगठनों से सम्बन्धित महिलाओं से प्रत्यक्ष रूप से मेल–जोल रखने तथा सीखने के अवसर प्रदान करती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि परिषद् केवल उन्हीं कामों को महत्व दे, जो ग्रामीण/स्थानीय महिलाओं द्वारा स्वयं आयोजित तथा क्रियान्वित किये जा सकें। स्त्री–पुरूष या फिर जातिगत असमानता से सम्बन्धित भावनाएं और बाधाएं खुलकर गोष्ठियों में सामने आते हैं, जो परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने की दिशा में एक अनौपचारिक एवं महत्वपूर्ण प्राथमिक कदम है।

जमीन–प्रबन्धन से जुड़े कार्यों में नर्सरी लगाना, चारा उत्पादन, धेराबंदी करना, खाद बनाना, रोकबाँध बनाना तथा जानवरों की मुक्त चराई पर सम्मिलित रूप से रोक लगाना, जंगलों को बचाना, वनीकरण तथा प्राकृतिक सम्पदाओं का पुनरूत्पादन आदि काम सम्मिलित हैं। इसके अलावा पानी से जुड़ी समस्याओं का समाधान (जैसे–पुराने स्रोतों का जीर्णोद्धार, वर्षा जल संरक्षण, पॉलीथीन की टंकियाँ, फेरो–सीमेंट टैंक और हैंडपम्प आदि) संगठनात्मक तरीके से किया जाता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रमों में शौचालय बनाना, महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, व्यक्तिगत सफाई, घर एवं गाँव की स्वच्छता, पोषण संबंधी जानकारियों को फैलाना एवं संबंधित गतिविधियों का संचालन आदि कार्य सम्मिलित हैं। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानता संबंधी विषयों पर शिक्षा व जागरूकता लाने के लिए गोष्ठियाँ, सेमीनार, कार्यशालायें तथा प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। परिषद् की अनेक सदस्याएं पंचायत प्रतिनिधि बन कर महिलाओं की आवाज को बढ़ा रही हैं। हर वर्ष परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में लगभग बाइस महिला सम्मेलन आयोजित किये जाते है। साथ ही, महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किया गया है।

जून 2014 में सम्पन्न हुए पंचायतीराज चुनाव में उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े हुए 526 लोग (379 महिलाएं) ग्राम–प्रधान, पंच, क्षेत्र एवं जिला पंचायत सदस्य चुने गये हैं। इसमें बारह महिलाएं क्षेत्र पंचायत सदस्य बनी हैं। महिला संगठनों की अध्यक्षा रह चुकी दो महिलाएं जिला पंचायत सदस्य चुनी गई हैं।

संगठन की सदस्याएं उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों में नीतिगत बदलाव की माँग कर रही हैं। विभिन्न कार्यक्रम जो कि ग्रामीण विकास, महिला विकास, शिक्षा, खनन, कृषि, जंगल, पानी, आयवृद्धि और पंचायती राज व्यवस्था के लिए बनाये गये हैं, उनके बारे में ग्रामीण महिलाओं की अपनी समझ, जानकारी और अनुभव है। साथ ही, उत्तराखण्ड महिला परिषद् के रूप में काम करते हुए महिलाओं ने विकास के मुद्दे पर अपनी एक वैकल्पिक समझ व कार्य–विधि विकसित की है। इन्हीं अनुभवों को आधार बनाकर उत्तराखण्ड महिला परिषद् की सदस्याएं, सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों में बदलाव व सुधार की माँग करती हैं।